



जीवन वैभव

शिक्षाप्रद साहित्य की त्रैमासिक पत्रिका

स्थापना वर्ष : 33, अंक-1, जनवरी-मार्च 2019



संपादक
डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

सहायक संपादक
अरविन्द पाण्डेय
आशुतोष पाण्डेय

कानूनी सलाहकार
श्री के.बी. उपाध्याय

सलाहकार मण्डल

श्री डी.पी. दुबे (से.नि.आय.ए.एस.), श्री मनोज अग्रिहोत्री
सुनील भण्डारी (मुम्बई), सौरभ पुरोहित
विनोद जोशी (उज्जैन), डॉ. अरविंद राय, पी.एच.डी. (यू.के.)

प्रकाशन कार्यालय: 15-ए, प्रेस कॉम्प्लेक्स,
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल मोबा.: 9425008662

(सम्पादक मण्डल के सभी सदस्य मानसेवी हैं।)
प्रकाशित लेखों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।
सभी प्रकार के विवाद का न्याय-क्षेत्र भोपाल रहेगा।

मूल्य

एक प्रति	—	30 रुपये
वार्षिक	—	100 रुपये
त्रैवार्षिक	—	300 रुपये
आजीवन	—	1800 रुपये

अनुक्रमणिका

क्रं.	विवरण	पृष्ठ क्रं.
1.	वंदना	2
2.	अमृत घट	4
3.	वैभव दर्शन- हिम्मतवान बनकर जीवन में प्रगतिवान बने	5
4.	लोग एक लिथि पर मनाएंगे त्यौहार कैलेंडर होगा तैयार	6
5.	मेडिकल शिक्षा प्राप्त कर डॉक्टर बनने के ग्रहयोग	7
6.	अच्छे खिलाड़ी बनने के ग्रहयोग एवं उनकी कुछ कुंडलियों का विवेचन	11
7.	जीवन में प्रसन्नता के लिए सदाचार आवश्यक	14
8.	ज्योतिष के अनुसार मानसिक तनाव के कारण एवं इसके उपाय	15
9.	रमल ज्योतिष बताएगा सन्तान सुख कब	17
10.	गर्हों का राजा सूर्य अपने प्रकाश से हमें क्या-क्या देता है?	19
11.	निःशुल्क ज्योतिष सम्मेलन संपन्न	20
12.	सद्विचारों का भंडार है रामचरित मानस	21
13.	स्वस्थ रहना सबसे अधिक सुखी जीवन	23
14.	अनुभव का अमृत	25
15.	वास्तु-सूत्र	27
16.	अनायास मिटी जाईगो संकट तुलसी को	28
17.	त्वचा रोग और फलित ज्योतिष	29
18.	ईस्वी वर्ष 2019 आपके लिए कैसा रहेगा?	31
19.	गर्हों के राशि परिवर्तन योग	33
20.	त्रैमासिक राशि भविष्य फल	35
21.	त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त	39
22.	आपके पत्र	42

सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा।

स्वामित्व, प्रकाशक, मुद्रक, श्रीमती प्रेमलता पाण्डेय, 15-ए, इंदिरा प्रेस कॉम्प्लेक्स, भोपाल से प्रकाशित एवं मेश प्रिंटर्स, 105-ए, सेक्टर-एफ, गोविन्दपुरा, भोपाल-462011(म.प्र.) से मुद्रित, संपादक: डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय।

संस्थापक-संपादक: स्वर्गीय श्री रामचन्द्र जी पाण्डेय, स्वर्गीय श्री व्यंकटराव जी यादव



वन्दना

मेरों भलो कियो राम आपनी भलाई
हों तो साईं द्रोही पे सेवक हित साईं ॥1॥

रामसो बड़ो है कौन, मोसो कौन छोटे,
रामसो खरो है कौन, मोसो कौन खोटो ॥2॥

लोक कहै राम को गुलाम हों कहावों।
ऐतो बड़ो अपराध मों न मन बावों ॥3॥

पाथ माथे चढ़े तून तुलसी ज्यों नीचो।
बोरत न बारि ताहि जानि आपु सींचौ ॥4॥

भावार्थ : श्री रामजी ने अपने भलेपन से ही मेरा भला कर दिया। क्योंकि मैं तो स्वामी के साथ बुराई करने वाला हूँ। परन्तु मेरे स्वामी श्रीराम सेवक के हितकारी है ॥1॥

श्री रामजी से तो बड़ा कौन है और मुझसे छोटा कौन है? उनके समान खरा कौन और मेरे समान खोटा कौन है ॥2॥

संसार कहता है कि मैं (तुलसीदास) रामजी का गुलाम हूँ और मैं भी यह कहलवाता हूँ, अर्थात् राम का सेवक न होकर भी मैं इस पदवी को स्वीकार कर लेता हूँ। यह मेरा बड़ा भारी अपराध है, तो भी श्रीराम का मन मेरी तरफ से तनिक भी नहीं फिरा है ॥3॥

हे तुलसी ! जैसे तिनका बहुत नीच होने पर भी जल के मस्तक पर चढ़ जाता है, परन्तु जल उसे अपने द्वारा ही सींचकर पालापोसा हुआ समझकर डुबोता नहीं। (इसी प्रकार भगवान श्री रामजी समझते हैं) ॥4॥





सम्माननीय पाठक बंधु,

जीवन वैभव का नववर्ष 2019 अंक प्रस्तुत करते हुए हम प्रसन्नता का अनुभव करते हैं, क्योंकि आपके द्वारा इस जीवन वैभव पत्रिका को सराहा, नियमित सदस्यता ग्रहण करके हमें प्रोत्साहन मिलने के फलस्वरूप 32 वर्ष पूर्ण करके 33 वें वर्ष में प्रवेश किया है। परिवार के लिए पठनीय आलेख होने के कारण पूरा परिवार इसको पढ़कर लाभान्वित हो रहा है।

भारतीय संस्कृति एवं परम्परा से जुड़े विषय जोकि जन हित में हो नियमित रूप से प्रत्येक अंक में प्रकाशित कर रहे हैं। व्यर्थ के ढोंग तथा अंधविश्वास से कोसों दूर रहकर ज्ञानवर्द्धक, नैतिकता, मानवधर्म, सद्चरित्रता से परिपूर्ण सामग्री प्रदान करना तो हमारा मूल उद्देश्य है, साथही स्वास्थ्य के लिए घरेलू उपचार, बीमारियों का खाद्यान्न से बचाव तथा अपने जीवन पथ पर दृढ़ता के साथ चलने की दृष्टि से भविष्य के पथ को प्रकाशमान करने के लिए ज्योतिष विषय पर सारगर्भित लेख जोकि ख्यातिनाम विद्वानों द्वारा लिखे जाते हैं जो कि आपको प्रतिअंक में ज्ञान वर्षा कराते हैं।

इस अंक में जीवन वैभव का कलेवर थोड़ा परिवर्तित स्वरूप में तथा लेखों की भाषा और रोचकता भी पाठकों के चाहे अनुसार की गई है। निश्चित रूप से आपको उत्तम प्रतीत होगी। आप सबका स्नेह और सहयोग हमेशा की भांति बना रहेगा।

नव वर्ष 2019 तथा मकर संक्रान्ति के पावन पर्व की सभी को शुभ कामनाएं।

अपना सदैव शुभेच्छु
डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय
संपादक

अमृत घट



1. महान बनने की सबसे पहली सीढ़ी नम्रता है नम्रता वह अमोघ अस्त्र है जो हमें सफलता की राह दिखाता है और मानव को देवता बना देता है। - **रस्किन**
2. शिष्टाचार शारीरिक सुंदरता की कमी को पूर्ण कर देता है वही व्यक्ति सर्वाधिक सुंदर है जो अपने शिष्टाचार से दूसरों के आधार पर विजय प्राप्त कर सकता बिना शिष्टाचार के सौंदर्य का कोई मूल्य नहीं। - **स्वेटमार्डन**
3. अगर आप दूसरों को प्रसन्न करना नहीं चाहते तो यही मानना पड़ेगा कि आप कुछ भी नहीं चाहते क्योंकि इसके ना होने पर आप कुछ भी नहीं प्राप्त कर सकते। - **रविंद्र नाथ टैगोर**
4. जिस परिश्रम में हमें आनंद प्राप्त होता है वह हमारी व्याधियों के लिए अमृत तुल्य है हमारी वेदना की निवृत्ति है। - **शेक्सपियर**
5. बात को बढ़ा चढ़ाकर कभी नहीं करनी चाहिए जो अपनी बात को बढ़ा चढ़ाकर झूठ सच मिलाकर कहते हैं वह अपने आप को दूसरों की निगाह में गिराते हैं और अपने आप को छोटा बनाते हैं। - **पुरुषोत्तम दास टंडन**
6. ईमानदारी, भल मनसाहत और परिश्रम करने की आदत हम बचपन में अपने घर में ही सीख सकते हैं अगर किसी बच्चे में इन गुणों के बीज बो दिए जाएं और कुछ वर्षों तक उन्हें अच्छी तरह ही चल जाए तो उन उसमें से गुणों के यह पौधे आज आसानी से नहीं उखाड़ ले जा सकते। - **एमरसन**
7. किसी मनुष्य की बुराई पर विश्वास मत करो जब तक तुम स्वयं उसे देखना लो यदि बुराई सचमुच देखने में आगे भी तो उसे भूल जाओ किसी पर प्रकट न करने लगे। - **स्वामी विवेकानंद**
8. ज्ञानी पुरुष वह है जो अपनी बुद्धि से काम लेता है किसी भी काम को करने से पहले उसका परिणाम सोच लेना ही बुद्धिमानी की निशानी है। - **स्वामी रामतीर्थ**
9. ज्ञान तीन प्रकार से मिल सकता है मन से जो सबसे श्रेष्ठ होता है अनुसरण से जो सबसे सरल होता है और अनुभव से जो सबसे कड़वा होता है। - **संत ज्ञानेश्वर**
10. ज्यादा बोलने की आदत अच्छी नहीं होती इससे आदमी हलका समझा जाता है ,इसलिए बहुत बोलने की बजाय बहुत सुनना कहीं अच्छा है। - **संत तुलसीदास**

वैभव दर्शन

हिम्मतवान बनकर जीवन में प्रगतिवान बने

‘ वैभव दर्शन स्थाई स्तम्भ में जीवन में अपने लक्ष्य पूर्ति के लिए किए जाने वाले प्रयास में हिम्मतवान बनकर करना चाहिए यह बात जीवन वैभव के पूर्व संस्थापक सम्पादक द्वारा चर्चा के दौरान कही थी। उल्लेखनीय है कि संस्थापक संपादक पं. रामचन्द्रजी पाण्डेय अस्वस्थ थे उस समय अपने अनुभव को व्यक्त किया करते थे। उनके अनुभव जो कि शिक्षाप्रद थे, जस स्थाई स्तम्भ वैभव दर्शन में पाठकों के लाभार्थ दिया जा रहा है। -सम्पादक



स्व. श्री रामचन्द्र जी पाण्डेय
संस्थापक संपादक

जीवन में नैतिकता पूर्ण कार्य कितनी भी कठिनाई भरे हो, परंतु यदि उन्हें अपने आत्म बल और विश्वास के साथ करेंगे तो सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। मनुष्य के पास सबसे बड़ी पूंजी है साहस और सबसे बड़ी विपत्ति है भीरुता। यदि हम अंतरंग से मजबूत हो हिम्मत हमारे अंदर बनी रहे और सदैव आगे बढ़ने का रास्ता खोजने में धैर्य और उत्साह पूर्वक लगे रहे तो कठिन परिस्थितियां भी धीरे-धीरे सरल होने लगती हैं। हिम्मत हारने और भविष्य के प्रति आशा छोड़ने वाला व्यक्ति तो एक तरह से सफल हो गया समझे ऐसे मनुष्य फिर अपना आत्म बल बढ़ाने के लिए कई प्रकार के साधन खोजने लगते हैं, विभिन्न प्रकार की मनोतियां मानने लगते हैं। जहां साधन नहीं है वहां यत्न करने पर साधन मिलने लगते हैं जहां थोड़ी सी सहायता की भी संभावना नहीं हो यदि आत्मविश्वास का बल रखेंगे, तो हम देखेंगे कि हमारे कार्य में सहायता करने वाले मिलने लगेगी।

वास्तव में प्रकृति उसी व्यक्ति को सहयोग करती है जिसके मन में कुछ करने की लगन होती है संसार का यह नियम है कि मनस्वी और हिम्मत वार व्यक्ति आगे बढ़ते जाते हैं तथा कायर व्यक्ति जिसके मन में संदेह होता है उसे प्रकृति स्वयं रोक देती है जिस प्रकार कूड़ा करकट को नष्ट करते हुए उपयोगी सामग्री को काम में लाया

जाता है ठीक उसी प्रकार हिम्मत वालों तथा कर्मठ व्यक्ति को समाज एवं साथी वर्ग सहयोग करने लगता है।

मन से जो व्यक्ति कायर है जिसको किसी कार्य करने के प्रति उमंग ही नहीं है वह तो एक तरह से विकृत शरीर के समान है जो कि मानसिक रूप से विकलांग की श्रेणी में माना जा सकता है ऐसे व्यक्ति सुविधा साधन उपलब्ध होने पर भी कुछ करने की हिम्मत नहीं जुटा पाते एवं पूरे जीवन भर कूप मंडूक की भांति बने रहते हैं ठीक इसके विपरीत हिम्मतवालाव्यक्ति प्रतिकूल समय में भी हंसते हुए तथा प्रसन्न चित्त होते हुए एक योद्धा की तरह जीवन जीता है उसके रास्ते में किसी की रोक तोक करने वाला कोई व्यक्ति नहीं होता ऐसा व्यक्ति मनस्वी होता है जो अपना रास्ता खुद ढूंढ लेता है।

हिम्मतवान व्यक्ति के लिए सभी दिशाएं प्रगति के द्वार खोल के रखती है सफलता उसके नजदीक होती है मनुष्य को उन्नति के उच्च शिखर पर जाने की यदि इच्छा हो तो उसे अपनी मना स्थिति को नियंत्रित रखना होगा साथ ही किसी के कहने से अपने आत्मविश्वास को कमजोर नहीं करना होगा। इससे उसे यशस्वी होने का लाभ तथा सदैव मनस्वी व्यक्ति की तरह अपना जीवन अपने आप बनाता है, तथा अपना जीवन को अपने ढंग से जीता है।



लोग एक तिथि पर मनाएंगे त्यौहार कैलेंडर होगा तैयार

ब्रह्म शक्ति ज्योतिष संस्थान द्वारा आयोजित ज्योतिष अध्यात्म मंथन समारोह मां भवानी शिव मंदिर हबीबगंज रेलवे स्टेशन पर सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। संस्थान के अध्यक्ष पंडित जगदीश शर्मा ज्योतिषाचार्य ने बताया कि राजधानी भोपाल के प्रमुख वरिष्ठ ज्योतिष आचार्यों ने मिल बैठकर निर्णय सिंधु पंचांग में दर्शाई तिथियों के विषय में मंथन किया सब ने एकजुटता से सभी पंचांगों में एकरूपता लाने के लिए मध्य प्रदेश राज्य ज्योतिष समाधान समिति का गठन किया। इसका अध्यक्ष धर्माचार्य पंडित विष्णु राजोरिया जी को बनाया गया एवं वरिष्ठ ज्योतिषी पंडित हेमचंद्र पांडे जी को संरक्षक मनोनीत किया गया।

सभी ने एक स्वर में कहा कि त्योहारों की भिन्नता ना हो इसके लिए एक नया कैलेंडर यह समिति तैयार करें जिससे चीजें त्योहार की तिथियों में एकरूपता

लाई जा सके। हिंदू नव वर्ष गुड़ी पड़वा पर इस कैलेंडर का प्रकाशन हो और उसी कैलेंडर के माध्यम से मध्य प्रदेश शासन भी छुट्टी घोषित करें जिससे मध्य प्रदेश के कर्मचारियों को भी इन तीज त्योहारों का आनंद प्राप्त हो सके। इस बीच तिथियों की घट बढ़ को लेकर पंडितों वा ज्योतिष आचार्यों ने अपने-अपने मत रखे। इस अवसर पर पंडित वैभव भट्टेले, पंडित सी एल पांचाल रूप नारायण शास्त्री, पंडित राम किशोर, पंडित विनोद गौतम, पंडित राम नारायण तिवारी, पंडित नरेंद्र दीक्षित, लक्ष्मी चंद्र चौधरी, आनंद वरदाना आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।





श्रीमती पुष्पा चौहान

आज के युग में विद्यार्थी एवं उसके माता-पिता की इच्छा होती है कि उसकी संतान डॉक्टर की उच्च शिक्षा प्राप्त कर सफल डॉक्टर का व्यवसाय अपना कर समाज में प्रतिष्ठावान बने। जिस प्रकार समाज में बीमारियों की संख्या बढ़ती जा रही है उसी प्रकार डॉक्टरों पेशे से जुड़े हुए लोगों का महत्व बढ़ता जा रहा है। ज्योतिष विज्ञान के आधार पर कौन जातक डॉक्टर बनेगा और किस तरह की बीमारियों का इलाज करेगा आदि-आदि सूक्ष्म विश्लेषण के बाद जाना जा सकता है। डॉक्टर बनने के ज्योतिष के कुछ मुख्य योग निम्नानुसार देखे जा सकते हैं-

मेडिकल शिक्षा प्राप्त कर डॉक्टर बनने के ग्रहयोग

1. यदि मेष, वृश्चिक, वृष, तुला, मकर या कुम्भ राशि की लग्न हो और उनमें मंगल-शनि या चन्द्र-शनि या बुध-शनि की युति हो या फिर सूर्य-चंद्र के साथ अलग-अलग तीन ग्रहों की युति हो, तो जातक चिकित्सा विज्ञान की पढ़ाई कर चिकित्सक बनने की प्रबल संभावना रहती है।
2. कोई भी लग्न या राशि हो केंद्र में सूर्य-शनि या सूर्य-मंगल-शनि या चंद्र-शनि या चंद्र-मंगल-शनि या बुध-शनि या बुध-मंगल-शनि या सूर्य-बुध-शनि या चंद्र-बुध-शनि की युति में से किसी की भी युति हो व इनमें कोई दो केन्द्राधिपत्य हो और युति कारक ग्रहों में से कोई अस्त न हो, तो जातक के डॉक्टर बनने की प्रबल संभावना होती है।
3. सामान्यतः यदि लग्न में मंगल स्वराशि या उच्च राशि का होकर बैठा हो तो भी जातक को सर्जरी में निपुण बनाता है। मंगल चूँकि साहस व रक्त का कारक है और सर्जन के लिए रक्त और साहस दोनों से संबंध होता है।
4. यदि कुंडली में कर्क राशि या मंगल बलवान हो तथा लग्न व दशम में मंगल तथा राहू का किसी भी रूप में संबंध हो, तो भी जातक को डॉक्टर बनाता है।
5. केतु हमेशा डॉक्टर की कुंडली में बली होता है। साथ ही सूर्य, मंगल एवं गुरु भी बलवान होने चाहिए। चूँकि सूर्य आत्मा का कारक है एवं गुरु बहुत बड़ा मरीज को ठीक करने वाला होता है।
6. वृश्चिक राशि दवाओं का प्रतिनिधित्व करती है, अतः इसका स्वामी मंगल भी ताकतवर होना चाहिए।
7. भाव 6 एवं उसका स्वामी का यदि भाव 10 से संबंध हो रहा हो, तो भी डॉक्टर बनाने में सहायक होता है।
8. यदि मंगल या केतू बली होकर दशवें भाव या दशमेश से संबंध बना रहा हो तो जातक सर्जरी वाला डॉक्टर हो सकता है।
9. मीन या मिथुन राशि गुप्त रोगियों से संबंधित दवाओं के डॉक्टर बनाने में सहायक होता है।





लग्नेश सूर्य हो और दशमेश शुक्र नवमस्थ हो तथा योगकारक मंगल शुभ स्थान में बली हो, तो डॉक्टर बनता है।

21. कुंडली में यदि मंगल भाव में हो तथा तृतीयेश भाव में 5 बैठे एवं शुक्र, चंद्र व सूर्य की अच्छी स्थिति में हो, तो जातक का स्त्री एवं बाल रोग विशेषज्ञ बनने की संभावना होती है।

10. यदि पंचमेश भाव 8 में हो, तो भी डॉक्टर बनने की संभावना होती है।
11. यदि भाव 10 में चतुर्थेश हो और दशमेश भाव 4 में हो, तो जातक दवाएं जानने वाला तथा दवाओं के माध्यम से जीवन यापन कर डॉक्टरी पेशा अपनाता है।
12. जिन जातकों की कुंडली में चंद्र व गुरु का बली संबंध होता है, वे भी सफल चिकित्सक होते देखे गये हैं।
13. यदि कुंडली का आत्मकारक ग्रह अपने मूल त्रिकोण का लग्न में पंचमेश से युति कर रहा हो, तो जातक प्रसिद्ध नाम वाला चिकित्सक होता है।
14. यदि आत्मकारक ग्रह या भाग्येश या दोनो वर्गोत्तमी होकर कारकांश कुंडली में लग्न से केंद्र में हो, तो रसायन से संबंधित दवाओं का व्यवसाय करने की संभावना रहती है।
15. यदि सूर्य और मंगल की पंचम भाव में युति हो तथा शनि अथवा राहू भाव 6 में हो, तो जातक सर्जन हो सकता है।
16. यदि वृश्चिक राशि में बुध तथा तृतीय भाव पर चंद्र की दृष्टि हो तो जातक मनोचिकित्सक हो सकता है।
17. यदि कुंभ लग्न में स्वगृही मंगल दशम भाव में हो तथा चंद्र व सूर्य भी अच्छी स्थिति में हो, तो ऐसा जातक भी सर्जन हो सकता है।
18. यदि समराशि का बुध हो और लग्न विषम राशि की हो तथा धनेश मार्गी हो तथा अच्छे स्थान में हो, मंगल व चंद्र भी अच्छी स्थिति में हो, तो जातक को विख्यात चिकित्साशास्त्री बना सकता है।
19. यदि कर्क लग्न की कुंडली में छठे भाव में गुरु व केतु बैठे हों, तो जातक होम्योपैथिक डॉक्टर बन सकता है।
20. सिंह लग्न कुंडली के दशम भाव में

22. कुंडली के पंचम भाव में यदि सूर्य-राहू या राहू-बुध युति हो तथा दशमेश की इन पर दृष्टि हो, साथ ही मंगल, चंद्र, गुरु भी अच्छी स्थिति में हों, तो जातक चिकित्सा क्षेत्र में ज्योतिष प्रयोग द्वारा सफल चिकित्सक बन सकता है।

23. यदि कुंडली में लाभेश और रोगेश की युति लाभ भाव में हो तथा मंगल, चंद्र, सूर्य भी शुभ होकर अच्छी स्थिति में हों, तो जातक का चिकित्सा क्षेत्र से जुड़ने की संभावना होती है।

उपरोक्त कुछ योग जो अनुभव के अनुधार पर सटीक पाये गये हैं, को दिया गया है। इनमें जितने ज्यादा से ज्यादा योग जातक की कुंडली में होंगे उतनी ही प्रबल संभावना चिकित्सक बनने की होगी। इसके अतिरिक्त कुछ सफल चिकित्सकों की कुंडलियों का विवेचन भी आगे दिया जा रहा है। जिन्हें उदाहरण के तौर पर देख सकते हैं

उक्त कु.1 में एक स्त्रीरोग विशेषज्ञ डॉक्टर की है। इस कुंडली में रोग भाव में चिकित्सा कारक मंगल होकर लग्नेश गुरु में दृष्ट है। रोगेश शुक्र पर राहू की दृष्टि एवं राहू-चंद्र पर मंगल की दृष्टि और पंचमेश बुध पर केतु की दृष्टि एवं कर्मेश शनि की सूर्य पर परस्पर दृष्टि आदि जातिका को चिकित्सा क्षेत्र की शिक्षा

20.8.1965, 23.58			
3 गु	1		
4 बु (व)	2 च राहू		12
	5 सूर्य	11 शनि (व)	
6 शुक्र	8 केतु		10
	7 मंगल		9

दिला कर काम करने की ओर इंगित कर रहा है। स्त्री कारक चंद्र नवांश में शनि के साथ एवं दूसरा स्त्री कारक शुक्र नवांश में उच्च का मंगल से दृष्ट है। शुक्र के नवांश में गुरु होकर बुध पर दृष्टि है। इन्हीं कारणों से जातिका उच्चस्तर की स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉक्टर का कार्य कर रही है।

उपरोक्त कुंडली.2 एमबीबीएस तथा पीजी किये हुए डॉक्टर की है। कुंडली में लग्नेश मित्रग्रही होकर भाव 9 में भाग्येश, रोगेश एवं दशमेश को तीसरी

10.11.1979, 12.30 दिन			
	11 के	9	
12		10	शु 8 बु
	1		सू 7
2		4 चंद्र	6 श.
	3		5 मं.रा.गु

दृष्टि से प्रभावित कर रहा है। साथ ही चिकित्सा क्षेत्र के कारक चंद्र, मंगल एवं शुक्र जैसे ग्रह बलशाली हैं। चंद्रमा स्वगृही, मंगल गुरु-राहू के साथ आयु स्थान में मित्रराशिस्थ होकर बलवान है। साथ ही कारक मंगल की रोगेश बुध पर चतुर्थ दृष्टि है। मेष नवांश का मंगल, कन्या नवांश का चंद्रमा एवं वर्गोत्तम शुक्र भी चिकित्सा क्षेत्र की ओर इंगित कर रहे हैं। चंद्र कुंडली से भी मंगल रोगेश व भाग्येश गुरु के साथ धन स्थान में हैं। सूर्य दशम स्थान पर उच्च की दृष्टि दे रहा है, चंद्रमा राशीश होकर चंद्र लग्न में अच्छी स्थिति में है। मंगल द्वितीयस्थ केतू के नक्षत्र में व चंद्रमा लग्नेश शनि के नक्षत्र में है, जो जातक को बहुत गहराई से धैर्यपूर्वक कार्य करने का रुझान देता है। गुरु के नक्षत्र का सूर्य एवं शुक्र लग्नेश के नक्षत्र तथा राहू मघा नक्षत्र में होने से पुनः जातक को रोग निदान कार्य करने की क्षमता प्रदान कर रहे हैं। रोगेश बुध एवं पंचमेश शुक्र की युति भी जातक को रोग से संबंधित शिक्षा में सहायक हो रहे हैं।



विद्यार्थियों को सफलता पाने एवं याददाश्त बढ़ाने के उपाय

विद्याध्ययन करना भी एक तपस्या के समान है। हमारे ऋषि महात्माओं ने ज्ञान को पुस्तकों में नहीं बल्कि मन में हृदयंगम किया है। कण्ठस्थ करने की परम्परा प्राचीन काल से ही है इसी कारण कई स्तोत्रों में कण्ठस्थ करने पर उसको यशोवान, ज्ञानवान तथा विद्वान की संज्ञा दी गई है।

विद्यार्थियों को विद्या में सफलता प्राप्त करने के लिए स्मरण शक्ति बढ़ाने का अभ्यास सतत रूप से करना चाहिए और इसकी शुरुवात सबसे पहले परिवार में माता-पिता को करना चाहिए। बालक को उसकी जिज्ञासा शांत करना उसके पूछे गए प्रश्नों का समाधान पूर्वक उत्तर माता-पिता द्वारा देने से बालक को ज्ञानार्जन की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। इसीलिए तो बालक का प्रथम गुरु उसके माता-पिता को कहा गया है।

जब बालक अपने स्कूलीय विद्या के लिए पाठशाला में प्रवेश करता है तब उसकी

‘
विद्यार्थियों की जन्म कुण्डली के आधार पर उनकी जन्म कुण्डली में पंचमेश जो कि बुद्धि का कारक है, शुभग्रह होने शुभग्रह की दृष्टि होने पर सकारात्मक बुद्धि देता है जिसके फलस्वरूप व्यक्ति की स्मरण शक्ति प्रबल होती है। पापग्रह अथवा क्रूरग्रह लग्न, पंचम, द्वितीय, नवम तथा दशम भाव में होने पर उनकी वृत्ति में अहंता तथा आलस्य के साथ-साथ कार्यों को करने में मन साथ नहीं देता अतएव विद्याभ्यास में स्मरण शक्ति बाधित होती है जबकि शुभ अथवा शुभग्रहों के नक्षत्र में स्थित ग्रहों का शुभफल प्राप्त होकर मन वचन एवं कर्म से शुभत्व होता है। चन्द्रमा जो कि मन का कारण है उसकी शुभता आवश्यक है, पुराने समय में बालक को हाथ एवं पांव तथा गले में भी चांदी के आभूषण पहनाया जाता थे जिससे बालक का चन्द्रमा शुभत्व वाला हो और उसका शरीर पर शुभ प्रभाव हो सके।’

प्रारंभिक ज्ञान को चित्रों द्वारा समझाया जाता है ताकि वह व्यवहारिक जीवन में काम में आने वाली वस्तुओं के चित्र को देखकर स्मरण में उस शब्द को याद रख सके। बालक की स्मरण शक्ति याददाश्त बढ़ाने में बाल्यकाल में उसके साथ प्रेम पूर्वक व्यवहार करते हुए व्यावहारिक शब्दों और पारिवारिक रिश्तेदारों और समाज के व्यक्तियों को पारिवारिक वातावरण देते हुए याददाश्त की बढ़ोत्तरी की जाती है।

ज्योतिष शास्त्र में विशेष रूप से बुध, बृहस्पति और चंद्र ग्रह का महत्व माना गया है। इन ग्रहों के शुभफल की वृद्धि करने से याददाश्त की बढ़ोत्तरी होती है।

मैंने अपने अनुभव में पाया है कि यदि कम उम्र बालक जो कि स्मरण शक्ति में कमजोर है उसे अधिक कीमती रत्न धारण नहीं पहनाए जा सकते बल्कि हल्के और कम मूल्य के रत्न धारण कराना चाहिए। ‘तुरमुलई’ जो कि



अनेक रंगों में उपलब्ध होती है। उसमें से हरे रंग की तुरमुलई, लाल अथवा सफेद डोरे में लाकेट में बनाकर गले में पहनाई जा सकती है ताकि स्मरण शक्ति में बुध ग्रह के लिए बौद्धिक विकास में सहयोगी बन सके। चंद्रमा के शुभत्व के लिए चांदी के आभूषण बालक को पहनाए जाने की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है।

सवरे उठकर हाथ की हथेली के दर्शन- हमारी प्राचीन परम्परा है कि आत्मिक संतुष्टी और माता लक्ष्मी, सरस्वती एवं भगवान गोविंद के दर्शन हम अपने हाथ की हथेली में ही स्मरण कर दर्शन कर लेते हैं-

**कराग्रे वसति लक्ष्मी
कर मध्येतु सरस्वति
कर मूलेतु गोविन्दम्
प्रातः कर दर्शनम्।**

इस प्रकार हाथ की अंगुलियों में माता लक्ष्मी का निवास होता है, हथेली के बीच मां सरस्वती तथा हथेली के प्रारंभ मूल में भगवान गोविंद के दर्शन करते हुए, जिन हाथों से हम अपना कर्म करते हैं उससे लक्ष्मी, जिन हाथों से लेखनी

द्वारा लिखते हैं उससे मां सरस्वती तथा जिन हाथ के मूल से हमें कार्य के निर्देश प्राप्त होते हैं उसमें साक्षात् 'गोविन्द' की भूमिका होती है। मां सरस्वती के प्रतिदिन दर्शन से हमें स्मरण शक्ति की वृद्धि होती है, इसमें कदापि संशय नहीं है।

विद्यार्थियों की जन्म कुण्डली के आधार पर पंचमेश जो कि बुद्धि का कारक है, शुभग्रह होने अथवा शुभग्रह की दृष्टि होने पर सकारात्मक बुद्धि देता है जिसके फलस्वरूप व्यक्ति की स्मरण शक्ति प्रबल होती है। पापग्रह अथवा कूरग्रह लग्न, पंचम, द्वितीय, नवम तथा दशम भाव में होने पर उनकी वृत्ति में अहंता तथा आलस्य के साथ-साथ कार्यों को करने में मन साथ नहीं देता अथवा विद्याभ्यास में स्मरण शक्ति बाधित होती है जबकि शुभ अथवा शुभग्रहों के नक्षत्र में स्थित ग्रहों का शुभफल प्राप्त होकर मन वचन एवं कर्म से शुभत्व होता है। चन्द्रमा जो कि मन का कारक है उसकी शुभता आवश्यक है, पुराने समय में बालक को हाथ एवं पांव में चांदी के आभूषण तथा गले में भी चांदी का आभूषण पहनाया जाता था

जिससे बालक का चन्द्रमा शुभत्व वाला हो और उसका शरीर पर शुभ प्रभाव हो सके और मनःस्थिति स्थिर रहे तथा स्मरण शक्ति उत्तम रह सके।

पूर्णिमा जिसमें कि सूर्य एवं चन्द्रमा एक दूसरे पर सप्तम दृष्टि में होते हैं। उस दिन समुद्र में तूफान उठना, मन में उद्विग्नता उत्पन्न होना, पागलखाने में पागलों की परस्पर अधिक शैतानी होना सर्वसिद्ध है। उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति का मन प्रभावित होता है। इस दिन व्रत उपवास करने का विधान पहले से ही हमारे ऋषि मुनियों ने रखा है ताकि पेट के खाली रहने, भारी खाद्यान्न नहीं खाने से मनस्थिति शांत रहती है जिससे याददाश्त उत्तम रहती है। इसीलिए तो यदि की कोई बात याद नहीं आ रही होती है तो उसे ठण्डे दिमाग से सोचने का हमारे द्वारा समय मांगा जाता है।

जिस प्रकार प्रातः करदर्शन से स्मरण शक्ति तेज होती है। उसी प्रकार सरस्वती मंत्र के जप करने से भी लाभ मिलता है। यदि विद्यार्थियों को समय की कमी हो तो ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः मंत्र का यथा शक्ति तथा यथा समय जप कर सकते हैं। इसका भी लघुस्वरूप केवल "ॐ ऐं" मंत्र का जप करना भी लाभप्रद माना गया है।

महर्षि वाल्मिकी जिनके द्वारा संस्कृत भाषा में रामायण की रचना की है उनके बारे में यह जानकारी है कि पहले वे विद्वता नहीं रखते थे किंतु बाद में उन्हें आत्मानुभूति हुई और विद्वान बन गए। उनके मुंह से पहली बार संस्कृत का श्लोक उद्भूत हुआ उसे स्मरण शक्ति में उपयुक्त और ज्ञान प्राप्ति में उत्तम माना गया है-श्लोक निम्नवत है-

**ॐ मां निषाद प्रतिष्ठासम
त्वमगमः शास्वति समा
यद्क्रोञ्ज मिथुमादेकमवधि
काममोहितम्।**

किसी शिकारी द्वारा हंस के जोड़े में से एक को तीर से मारने पर महर्षि वाल्मिकी द्वारा प्रथम बार मुंह से उच्चारित श्लोक को स्मरण शक्ति तथा विद्या प्राप्ति में उत्तम में माना गया है।



एस.एस. लाल

अच्छे खिलाड़ी बनने के ग्रहयोग एवं उनकी कुछ कुंडलियों का विवेचन

आजकल कुछ खेल जैसे क्रिकेट, टेनिस एवं हॉकीआदि ग्लैमरस होकर धन, मान, प्रतिष्ठा वाले जाने जा रहे हैं। वैसे तो खेल लोगों को एकजुटता में बांधे रखने एवं मनुष्यों के शरीर सौष्ठव को बरकरार रखने वाले जाने जाते रहे हैं। युवावर्ग का रुझान अब उन विशेष खेलों की तरफ जाते हुए दिखाई दे रहा है, जिनमें शोहरत, मान-सम्मान, धन एवं लोकप्रियता है। इन खेलों में विशेष कर क्रिकेट व टेनिस कुछ ज्यादा ही चर्चित व उत्तेजनात्मक होकर जनता बुरी धारणाएं खेल प्रदर्शन के आधार पर बनती और बिगड़ती रहती हैं। जो खिलाड़ी अच्छा दमदार खेल खेलता है। उसको जनता हाथों-हाथ लेकर शोहरत की बुलंदियों पर पहुंचा देती है और बड़ी-बड़ी कंपनियां अपने उत्पादों के प्रचार प्रसार हेतु अनुबन्धित कर अत्यधिक धन भी प्रदान करती है। आखिर कुछ लोग खेल में इतना

ज्यादा नाम और धन क्यों कमा लेते हैं। इन सब बातों को एक शोध के रूप में लिया गया। उन ग्रहों, ग्रह संबंधों, ग्रह दृष्टि संबंधों, भावेशों के आपसी संबंध, दशाएं, नक्षत्रों एवं ग्रहगोचरों को देखा गया, तो कुछ व्यावहारिक रूप से नामी-गामी चर्चित खिलाड़ियों की कुंडलियों में अधिकांशतः पाये जा रहे योगों को निम्नानुसार दिया जा रहा है-

1. खेल में ताकत एवं साहस का सबसे बड़ा योगदान होता है। जिसका कारक मंगल माना जाता है। मंगल का कुंडली में बलवान होकर पराक्रम भाव के स्वामी से युति या संबंध हो या दशम भाव में बैठे जिसका कि भाव कारक होकर दिग्बली होता है, तो जातक साहसी खिलाड़ी बन सकता है। यदि यही मंगल लग्नेश या लग्न से



संबंध करे, तो जातक हृष्ट-पुष्ट जुझारु भी होता है।

2. यदि तुला लग्न की कुंडली में दशमेश चंद्र लग्न में सप्तमस्थ स्वगृही मंगल से दृष्टि संबंध करता हो, लग्नेश केंद्र में शुभ स्थिति में हो, पराक्रम भाव में सूर्य लाभेश होकर योगकारक शनि से युति करे, पराक्रमेश गुरु को मंगल देखे तथा राहू वायू कारक ग्रह व्यय भाव में मित्र राशि का होकर लग्नेश को दृष्ट करे, तो जातक देश विदेश में अंतर्राष्ट्रीय स्तर के खेल में प्रवीणता हासिल कर मान-सम्मान, यश, धन, अर्जित कर विख्यात हो सकता है।
3. तुला लग्न की कुंडली में ही यदि लग्नेश लाभेश के साथ युति कर धन भाव में हो, गुरु पराक्रमेश होकर लग्न में पंचमस्थ मंगल को दृष्टि करे, पराक्रम भाव में भाग्येश बुध कर्मेश चंद्र के साथ युति कर भाग्य भाव को देखे तथा योग कारक शनि केन्द्र में गुरु से दृष्ट हो, तो ऐसा जातक बुद्धि से खेले जाने वाले खेलों की प्रतियोगिताओं में अंतर्राष्ट्रीय स्तर का ख्याति प्राप्त खिलाड़ी हो सकता है।
4. यदि लग्नेश शुक्र योगकारक शनि एवं

पराक्रमेश चंद्र के साथ लग्न में हो, पराक्रम भाव में साहस और हिम्मत खेलों का कारक मंगल त्रिकोणेश बुध व ऊंचाई देने वाला केतू के साथ होकर नवमस्थ राहू से दृष्ट हो एवं यश दिलाने वाला सूर्य चतुर्थेश होकर भाव 2 में स्वगृही गुरु से दृष्ट हो, तो ऐसा जातक पढ़ाई में रुचि न लेते हुए तातक से खेले जाने वाले खेल में रुचि लेते हुए पराक्रमी राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय स्तर का लोकप्रिय धन औ यश खिलाड़ी होता है।

5. मीन राशि की लग्न में पंचमेश चंद्र हो, साहस का प्रतीक मंगल स्वगृही भाग्यभाव में हो, दशम भाव में दशमेश गुरु, सूर्य, बुध, शुक्र, राहू सभी युति कर बैठे हों, तो ऐसा जातक अति पराक्रमी, हिम्मतवाला, जुझारु, धैर्य से खेलने वाला सौम्य प्रकृति का राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय स्तर का खिलाड़ी होता है।
6. तुला लग्न कुंडली का लग्नेश शुक्र उच्च के सूर्य के साथ सप्तम में बैठकर लग्न को देखे और इनकी युति पर खेल कारक मंगल उच्च का चतुर्थ में बैठकर चतुर्थ दृष्टि दे, पराक्रम भाव में राहू हो,

दशमेश भाव 2 में वृश्चिक का बैठकर योगकारक शनि से दृष्ट हो एवं पराक्रमेश गुरु मंगल के साथ युति कर दशम को उच्च दृष्टि दे, तो ऐसा जातक उच्च स्तर का रिकार्ड बनाने वाला देश-विदेश में नाम कमाने वाला खिलाड़ी बन सकता है।

7. मंगल यदि उच्च का धन भाव में होकर चतुर्थ दृष्टि से पंचम स्थित चंद्र को देखे तो आठवीं दृष्टि से मित्र राशि भाग्य भाव को देखे एवं साथ ही लग्नेश गुरु पराक्रम में बैठकर भाग्यभाव को एवं आय भाव में बैठे भाग्येश सूर्य-दशमेश बुध-लाभेश शुक्र की युति को दृष्टि करें और पराक्रमेश शनि मंगल की राशि में हो, तो ऐसा जातक अति पराक्रमी, साहसी, जुझारु होकर राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय स्तर का खिलाड़ी हो सकता है।
8. मेष लग्न हो स्वयं मंगल प्रधान राशि है, उसका स्वामी यदि दशमेश व लाभेश शनि के साथ भाव 6 प्रतियोगिता के घर में हो, भाग्येश गुरु की केन्द्र या त्रिकोण में होकर लग्न पर दृष्टि हो, सूर्य-बुध का योग हो, शुक्र उच्चाभिलाषी हो व नवांश में उच्च का हो, चतुर्थेश उच्च के राहू के साथ पराक्रम भाव में गुरु से दृष्ट हो, तो ऐसा जातक दिमाश का उपयोग करते हुए साहस व ताकत लगाकर खेले जाने वाला खेल को आत्मविश्वास से खेल कर राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त कर सकता है।
9. वृष लग्न में यदि सूर्य-शुक्र-बुध युति कर रहे हों, पराक्रम भाव में पराक्रम कारक मंगल योगकारक शनि व पराक्रमेश चंद्र के साथ बैठकर भाग्य भाव को उच्च दृष्टि से देखे, तो ऐसा जातक भारोत्तोलन जैसा खेल में राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान-सम्मान प्राप्त कर सकता है।
10. मेष लग्न का लग्नेश मंगल लाभ भाव में राहु के साथ केन्द्र में बैठे गुरु से दृष्ट हो, लग्न में ही दशमेश शनि चतुर्थेश चंद्र के साथ होकर भाग्येश गुरु से दृष्ट हो तथा सूर्य-बुध भाग्य भाव में युति करें एवं नवांश में शुक्र



उच्चाभिलाषी हो, तो ऐसा जातक की साहस के खेल खेलकर उच्चस्तर का जीवन यापन करने की प्रबल संभावना रहती है।

11. मंगल लग्नेश होकर उच्च का पराक्रम भाव में राहू के साथ हो, लग्न में सूर्य-बुध की युति हो, छठे बैठे गुरु पर मंगल की दृष्टि हो तथा भाग्येश चंद्र केन्द्र या त्रिकोण में शुभ स्थिति में हों, तो ऐसा जातक साहस भरे खेलों को तो खेलता ही है, साथ ही खिलाड़ियों का नेतृत्व करते हुए राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति व सम्मान प्राप्त कर धनी हो सकता है।
12. मंगल प्रधान राशि मेष लग्न में दशमेश और चतुर्थेश शनि-चंद्र इकट्ठे हों, पंचमेश सूर्य दशम में हो, पराक्रमेश बुध शुक्र से युति कर भाग्य भाव में हो तथा भाग्येश गुरु साहस कारक लग्नेश मंगल के साथ युति करे, तो ऐसा जातक उच्च स्तर का जुझारु खिलाड़ी होकर शोहरत व धन को प्राप्त कर सकता है।
13. यदि साहस कारक मंगल स्वगृही होकर दशम में दिग्बली हो, भाग्येश शुक्र लग्नेश शनि के साथ पराक्रम भाव में युति कर भाग्य भाव को देखे, लाभेश गुरु अपने ही धन भाव को देखे तथा पंचमेश बुध मंगल को दृष्टि दे तथा सूर्य केंद्र या त्रिकोण में हो, तो ऐसा

जातक का साहस पूर्वक खेले जाने वाले खेल को खेलते हुए विश्वस्तर का विख्यात खिलाड़ी होने की संभावना होती है।

14. कन्या लग्न का लग्नेश बुध दशमेश होकर शनि-सूर्य के साथ पंचम त्रिकोण में हो और इसे पराक्रम कारक पराक्रमेश मंगल-राहू से युति होकर दृष्टि करे, भाग्येश शुक्र शुभ स्थान केन्द्र में हो, तो ऐसा जातक उच्च स्तर का अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी हो सकता है।
15. सूर्य लग्नेश होकर बुध के साथ लाभ भाव में हो, पराक्रमेश शुक्र राहू के साथ व्यय भाव में हो, योगकारक एवं पराक्रम कारक मंगल दशम में बली होकर लग्न को देखे, गुरु-शनि की युति धनभाव में हो, तो ऐसा जातक साहस व ताकत वाले खेलों में अंतर्राष्ट्रीय स्तर का शोहरत व धन वाला खिलाड़ी हो सकता है।
16. खेलों का प्रतिनिधित्व करने वाला ग्रह मंगल यदि दशम में बैठकर दशमेश से संबंध करे, भाग्येश और दशमेश के किसी तरह का संबंध बनता हो, लग्नेश बुध होकर स्वयं लग्न को देखता हो, पराक्रमेश सूर्य का पंचमेश शुक्र के साथ युति संबंध होता हो, तो ऐसा जातक स्वयं उच्च पद पर रहते हुए निशानेबाजी (शूटिंग) जैसे खेलों



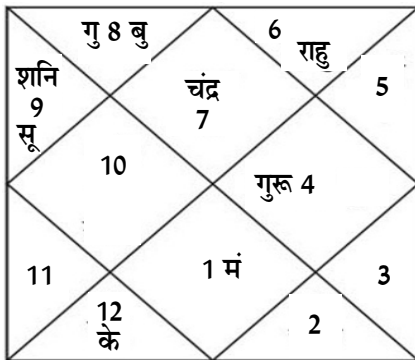
में विख्यात होकर यश-नाम कमाता है।

17. पराक्रमेश चंद्र यदि लग्न में हो और लाभेश गुरु पराक्रम में हो, लग्नेश के साथ खेलों से संबंधित ग्रह मंगल, सूर्य व पंचमेश बुध प्रतियोगिता के घर छठे में हो, योगकारक शनि केन्द्र में होकर लग्न व दशम को दृष्टि दे, तो ऐसा जातक भी उच्चस्तरीय ताकत भरे खेलों को खेलकर नाम और धन अर्जित करता है।

18. मंगल यदि वृश्चिक का होकर लग्न में भाग्येश चंद्र के साथ हो और उस पर संरक्षककर्ता गुरु की दृष्टि हो, पराक्रमेश शनि पराक्रम भाव में हो, उच्च का बुध लाभ भाव में गुरु से दृष्ट हो तथा दशमेश सूर्य का संबंध शुक्र से व्यय भाव में हो और इस पर शनि या राहु की दृष्टि हो, तो ऐसा जातक साहस भरे खेलों को खेलते हुए यश प्राप्त करता है।

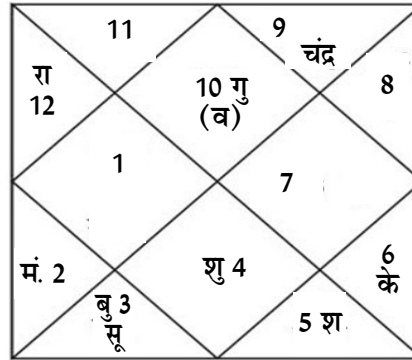
इसके अतिरिक्त और भी कई तरह के ग्रहयोग खेलों से संबंधित बनते हैं, पर उनको यहां स्थानाभाव के कारण दिया जाना संभव नहीं हो पा रहा है। विभिन्न खेलों के उच्चस्तरीय खिलाड़ियों से संबंधित कुछ कुंडलियों का विवेचन आगे दिया जा रहा है जिन्हें पाठकगण स्वमेव आंकलन करते हुए उक्त दिये गये ग्रहयोगों को देखने का प्रयास करें-

कु. 1 एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर के कैप्टेन रहे



क्रिकेट खिलाड़ी की है। इस कुंडली में खेल से संबंधित कारक ग्रह स्वगृही मंगल का सप्तम में बैठकर लग्न, कर्मभाव, कर्मेश, पराक्रमेश, भाग्येश एवं धनभाव को दृष्टि देकर अतिबली

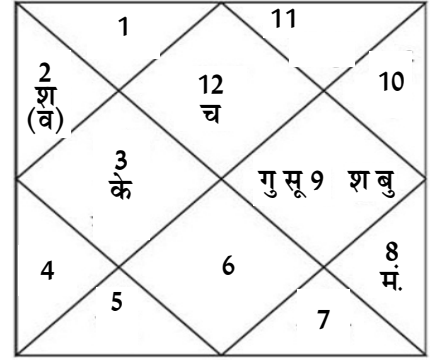
कर रहा है और कर्मेश चंद्र से स्वयं परस्पर दृष्टि संबंध कर राजयोग बना रहा है। जनता के भाव 4 में लग्नेश शुक्र का प्रेरक राहु से प्रभावित हो रहा है। जनता कारक शनि धनेश सूर्य के साथ पराक्रम भाव में बैठकर भाग्यभाव को प्रभावित कर रहे हैं। चतुर्थ जनता का भाव राहु से प्रभावित है। प्रतियोगिता भाव 6 का स्वामी गुरु भाग्येश बुध के साथ कारक मंगल की दृष्टि से प्रभावित है एवं भाव 6 व कर्मभाव को दृष्टि से प्रभावित कर रहा है। साथ ही राहु भी भाव 6 को दृष्टि से प्रभावित कर रहा है। नवांश कुंडली में मंगल स्वनवांश का होकर कर्म भाव में जनता भाव एवं जनता कारक शनि को दृष्टि से प्रभावित कर रहा है। प्रेरक राहु भी नवांश कुंडली में लग्न कुंडली के लग्नेश शुक्र और नवांश कुंडली के लग्न नवांश को दृष्टि से प्रभावित कर रहा है। इन्हीं सब बने ग्रहयोगों एवं बली कारकों के कारण ही जातक क्रिकेट में उच्चस्तर का खिलाड़ी रहा है।



इस कुं.2 का जातक अपने समय का अंतर्राष्ट्रीय रिकार्ड होल्डर लोकप्रिय क्रिकेट खिलाड़ी जाना जाता रहा है। इसमें देखें तो साहस व खेलों का कारक मंगल लाभेश व जनता कारक भाव 4 का स्वामी होकर पंचम त्रिकोण में बैठकर लाभभाव एवं द्वितीय हड्डी कारक लग्नेश शनि से परस्पर दृष्टि संबंध कर रहा है। साथ ही पराक्रमेश गुरु लग्न में बैठकर इसी मंगल को दृष्टि से बली रहा है। राहु पराक्रम भाव में बैठकर कर्मेश शुक्र को दृष्टि प्रभावित कर रहा है।

भाग्येश व प्रतियोगिता घर का स्वामी बुध राज्य कारक सूर्य के साथ बुधादित्य योग बना कर भाव 6 में ही है। नवांश कुंडली में मंगल जनता कारक शनि और राहु से दृष्टि द्वारा प्रभावित होकर बली है, उधर शनि भी राहु की दृष्टि से प्रभावित हो रहा है। इन्हीं सब ग्रहयोगों एवं बली कारकों के कारण ही जातक जनता में लोकप्रिय अंतर्राष्ट्रीय स्तर का खिलाड़ी जाना जाता रहा है।

यह कु. 3 भी क्रिकेट में उच्चस्तर का प्रदर्शन करने वाले कैप्टेन रहे यश,



नाम प्राप्त खिलाड़ी की है। इस कुंडली में साहस एवं खेलों का कारक मंगल भाग्येश होकर भाग्यभाव में ही होकर द्वितीय हड्डी व मज्जा कारक पराक्रम में बैठे लाभेश शनि से परस्पर दृष्टि संबंध कर दोनों बली हो रहे हैं। कर्मेश गुरु का कर्मभाव में ही प्रतियोगिता घर के स्वामी सूर्य, जनता कारक भाव 4 का स्वामी बुध, पराक्रमेश शुक्र एवं प्रेरक राहु के साथ युति कर सुखद स्थिति में है। कारक मंगल की अष्टम दृष्टि जनता कारक भाव 4 पर है और लग्नेश व कर्मेश गुरु का राहु के साथ प्रतियोगिता के घर 6 पर दृष्टि होने से प्रतियोगिताओं में सफलता इंगित हो रही है। नवांश कुंडली में मंगल, गुरु एवं सूर्य सभी वर्गोत्तम स्थित में है। इस तरह बने सभी तरह के ग्रहयोगों, बली कारकों के दृष्टि संबंध, कर्मेश-लग्नेश-भाग्येश-षष्ठेश का वर्गोत्तम होना व ग्रह दृष्टि संबंधों आदि के कारण ही जातक धैर्यशील एवं जुझारु जनता में जनता में लोकप्रिय उच्च स्तर का क्रिकेट खिलाड़ी जाना जाता है।

जीवन में प्रसन्नता के लिए सदाचार आवश्यक

हमारे जीवन में हम सदैव सुखी एवम् प्रसन्न रहना चाहते हैं इसके लिए आवश्यक है कि जीवन में हम अपने कुछ सिद्धांत तय कर ले। हमको इन सिद्धांतों के लिए निम्न बिंदुओं पर ध्यान रखना आवश्यक है

दूसरों के साथ ऐसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा कि हम स्वयं अपने लिए चाहते हैं। दूसरों के साथ बर्ताव भी कभी ऐसा न करें जैसा कि हम दूसरों से अपने लिए नहीं चाहते।

हमें दूसरों के लिए उदार बनना चाहिए

दूसरों के साथ आके लिए लालायित होकर नहीं रहना चाहिए स्वयं परिश्रमी कर्म शील और स्वाआश्रयी बनना चाहिए।

प्रारब्ध के बिना कोई भला यह बुरा नहीं कर सकता यह विचार मन में रखते हुए कर्म करना चाहिए ताकि किसी व्यक्ति से व्यर्थ में शत्रुता उत्पन्न ना होसके। अपने विचार में भी यह बात नहीं रखना चाहिए कि अमुक व्यक्ति ने मुझसे शत्रुता रखते हुए मेरा बुरा किया है। किसी व्यक्ति के द्वारा बुरा

वस्तुओं से बचाकर रखें अन्यथा आपका जीवन आलसी और आराम तलबी हो जाएगा।

परिवार में अपनों से बड़ों का आदर करना सीखें, उनकी सेवा करें, उनकी सेवा करना अपना सौभाग्य समझें। उनकी सेवा से आपके परिवार में सद्संस्कार उत्पन्न होंगे जो कि आने वाली पीढ़ी को भी प्रभावित करेंगे।

अपने जीवन में एक सिद्धांत बना ले, कमाना नीति से, खर्च करना रीति से और संसार में रहना प्रीति से यह



ताकि दूसरे व्यक्ति अपने साथ मधुर संबंध रख सके। किसी से आशा नहीं रखना चाहिए दूसरों की आशाओं को यथासंभव पूर्ण करने में सहयोग करना चाहिए तथा इसका कभी भी अभिमान नहीं करना चाहिए।

जहां तक बन सके अपनी आवश्यकताएं सीमित रखना चाहिए ताकि अनावश्यक खर्च न हो और इसके लिए अतिरिक्त धनराशि संग्रह करने की आवश्यकता न पड़े।

किसी भी विपत्ति में अथवा संकटकी स्थिति में धैर्य रखना चाहिए तथा इसे भगवान का प्रसाद समझकर अपने आत्म बल को उत्कृष्ट करते हुए विपत्ति का सामना करना चाहिए।

अपने जीवन में आराम करने वाला तथा

तभी बना जा सकेगा जब कि हमारे प्रारब्ध में ऐसा होगा यह मन में विचार करने से अनावश्यक तनाव और वैमनस्यतानही रहेगी।

किसी भी प्रकार का नशा नहीं करना जीवन की वास्तविक प्रसन्नता देता है। क्योंकि अनावश्यक खर्च बचता है और इस प्रकार अनावश्यक व्यय नहीं कीगई राशि परिवार के विकास में काम आ सकती है जो कि जीवन में प्रसन्नता का जन्म देगी इसका अनुभव व्यक्ति तभी कर पा सकता है जबकि उस के पास पर्याप्त आवश्यकतानुसार धन हो। अपने घर में हर प्रकार से सादगी रखना चाहिए। ज्यादा फर्नीचर और विलासिता की चीजों का संग्रह नहीं करें। अपने आपको आराम की

मापदंड अपनाने वाले व्यक्ति को जीवन में कभी कठिनाई महसूस नहीं होगी। अच्छे शिक्षाप्रद साहित्य का परिवार के सदस्य पठन करें, इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षा वर्धक पुस्तको का घर में संग्रह रहे ताकि परिवार के सदस्य जब भी उन समय मिले साहित्य को पढ़ सकें।

प्रत्येक प्रतिकूल परिस्थिति जो कर्म के फल रूप में प्राप्त हुई है, ऐसा समझकर भगवान का मंगल विधान मानते हुए स्वीकार करें और अपने आत्मबल को उंचा रखकर उसके निराकरण का प्रयास करें।

अपने कार्यों को प्रसन्न मन से मन लगाकर करते रहे, किसी अन्य व्यक्ति के छिद्र का अन्वेषण ना करें।

ज्योतिष के अनुसार मानसिक तनाव के कारण एवं इसके उपाय

‘ ज्योतिष शास्त्र के अंतर्गत बारह राशियां, 27 नक्षत्र तथा इनके 7 ग्रहों को स्वामी के रूप में माना गया है, ये द्वादश राशियां जन्म कुण्डली के स्थित बारह भावों में स्थित होती हैं। पूर्वी क्षितीज में उदित होने वाली राशि संबंधित व्यक्ति का जन्म लग्न माना जाता है। और उस समय राशियों में स्थित ग्रहों को जन्म लग्न के आधार पर संबंधित भावों में स्थित राशियों में ग्रहों को स्थापित किया जाकर जन्म कुण्डली का निर्माण किया जाता है साथ ही ग्रहों के तात्कालिक अंशात्मक स्थिति के अनुसार उन ग्रहों का राशि एवं नक्षत्र में उपस्थिति में मानी जाती है। ’



नहीं होती है ऐसी स्थिति में तनाव उपस्थित होता है।

- 2- चन्द्रमा की स्थिति बलवान हो, शुभ ग्रहों की दृष्टि में हो तथा उसके दूसरे और बारहवें भाव में शुभग्रह होने पर व्यक्ति सुखों का अनुभव करता है तथा संतुष्ट रहता है। लेकिन कृष्णपक्ष का चंद्रमा पाप ग्रहों की दृष्टि में या युति हो तो अंसतोष की भावना बनी रहती है। वह अन्य व्यक्तियों के सुखों की तुलना करता है और अपने आपको दुखी और असंतुष्ट महसूस करता है।
- 3- जन्म कुण्डली के प्रत्येक भाव के स्वामी यदि त्रिकभाव में, अशुभत्व वाले हो, पापग्रहों, शत्रुग्रहों या नीच राशि के ग्रहों के साथ युति हो अथवा दृष्टिगत हो तो उन भावों के अशुभफल को लेकर मानसिक तनावग्रस्त रहता है तथा उस भाव की पूर्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है।
- 4- पंचमेश, लग्नेश, धनेश, पराक्रमेश, सुखेश, षष्ठेश, सप्तमेश, भाग्येश, कर्मेश, लाभेश ये भाव ऐसे हैं कि इनकी आवश्यकता दैनिक जीवन में लगी रहती है। लग्नेश से शरीर एवं

व्यक्तित्व की, पंचमेश से विद्याबुद्धि एवं संतान की, धन एवं धनेश भाव से परिवार सुख और धन की व्यवस्था की चिंता एवं तनाव, उसी प्रकार पराक्रम भाव से अपने पराक्रम, भाई बहनों से संबंध आदि की चिंता एवं तनाव, सुखेश, चतुर्थेश, माता, मित्र, वाहन, भवन आदि के बारे में सुख की प्राप्ति की चिंता एवं उसके व्यवधान होने पर तनाव व्याप्त होता है। सप्तम भाव शत्रु और रोग यदि अधिक हो तो व्यक्ति दिन रात चिंताग्रस्त रहता है। उसी प्रकार सप्तम भाव याने जीवन संगिनी के साथ उत्तम संबंध नहीं हो तो तनाव की अधिकता होने लगती है।

आज का मानव विद्यार्थिकाल के बाद रोजगार की तरफ प्रेरित नहीं होकर केवल नौकरी चाहता है और नहीं मिलने पर बेरोजगार होकर तनावग्रस्त होता है, भाग्योदय नहीं होने के कारण वह दशमभाव याने कर्म से भी विमुख रहता है और खाली (कार्य) दिमाग का रहकर अनावश्यक चिंताग्रस्त रहता है। कर्म नहीं करने, नौकरी नहीं लगने के

- 1- यदि हम मानसिक तनाव का कारण जन्म कुण्डली के आधार पर पता करते हैं तो सबसे पहले जन्म राशि एवं लग्न की स्थिति को देखते हैं कि वह किस राशि और उस राशि में किस नक्षत्र का है। यदि शुभ ग्रह जैसे चंद्र, बुध, गुरु के नक्षत्र का है तो व्यक्ति परिस्थितियों को अपने अनुरूप बनाने का प्रयास करता है यदि नहीं है तो परिस्थितियों में सुधार के लिए अपनी प्रकृति से संतुलन बनाता है और तनाव रहित रहता है लेकिन पापग्रह मंगल, शनि, राहु, केतु के नक्षत्र में होने के कारण विभिन्न प्रकार की अपनी जिद्द की पूर्ति में लगा रहता है। अनावश्यक भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति की इच्छा करता है। उसके इर्द गिर्द पारिवारिक सदस्य तथा समाज के सदस्यों से भी वह अपने अहं की संतुष्टि तथा पूर्ति करना चाहता है। यदि



4- पंचमेश, लग्नेश, धनेश, पराक्रमेश, सुखेश, षष्ठेश, सप्तमेश, भाग्येश, कर्मेश, लाभेश ये भाव ऐसे हैं कि इनकी आवश्यकता दैनिक जीवन में लगी रहती है। लग्नेश से शरीर एवं व्यक्तित्व की, पंचमेश से विद्याबुद्धि एवं संतान की, धन एवं धनेश भाव से परिवार सुख और धन की व्यवस्था की चिंता एवं तनाव, उसी प्रकार पराक्रम भाव से अपने पराक्रम, भाई बहनों से संबंध आदि की चिंता एवं तनाव सुखेश, चतुर्दश, माता, मित्र, वाहन, भवन आदि के बारे में सुख की प्राप्ति की चिंता एवं उसके व्यवधान होने पर तनाव व्याप्त होता है। सप्तम भाव शत्रु और रोग यदि अधिक हो तो व्यक्ति दिन रात चिंताग्रस्त रहता है। उसी प्रकार सप्तम भाव याने जीवन संगिनी के साथ उत्तम संबंध नहीं हो तो तनाव की अधिकता होने लगती है। आज का मानव विद्यार्थिकाल के बाद रोजगार की तरफ प्रेरित नहीं होकर केवल नौकरी चाहता है और नहीं मिलने पर बेरोजगार होकर तनावग्रस्त होता है, भाग्योदय नहीं होने के कारण वह दशमभाव याने कर्म से भी विमुख रहता है और खाली (कार्य) दिमाग का रहकर अनावश्यक चिंताग्रस्त रहता है।

निष्पादन करने का आत्मबल देता है अतएव इस भाव के शुभत्व बल को बढ़ाना अर्थात् कोई ग्रह कष्ट दे रहा है तथा किसी शुभग्रह की दृष्टि है तो उस शुभग्रह की आराधना करके उसे बलवान करने से कार्य को सफलता की ओर अग्रसर करने की क्षमता देता है।

- 3- चंद्रबल को बली करना- मानसिक तनाव का मुख्य कारण चन्द्रमा है यह यदि निर्बल है पापग्रहों की युति अथवा दृष्टि में है ऐसी स्थिति में व्यक्ति तनावग्रस्त रहेगा तथा अपने कार्यों के सफलता में संदेह उत्पन्न करेगा अर्थात् मनोबल कमजोर रहेगा। ऐसे व्यक्ति को चंद्रबल को बढ़ाने के लिए सफेद पक्का मोती धारण करना चाहिये। यदि लाभ प्राप्ति में संदेह हो तब पूर्णिमाव्रत करना चाहिए। चांदी धातु के पात्र में भोजन अथवा पेय पदार्थ का सेवन करना चाहिए। सोमवार अथवा पूर्णिमा को सफेद अन्न या दूध का दान करना चाहिए।
- 4- जिस भाव के स्वामी की चिंता हो अथवा उस भाव के फल प्राप्ति का तनाव हो ऐसी स्थिति में उस भाव और भावेश को प्रबल करना चाहिए। उस भावेश की आराधना उपासना आदि करने से सफलता प्राप्त हो सकती है।

कारण उसको एकादश भाव का लाभ नहीं मिल पाता है अर्थात् आय रहित रहता है, ऐसे व्यक्ति का समाज में भी अस्तित्व कम रहता है जो कि तनाव का मुख्य कारण होता है। उपरोक्त तनाव को कम करने के लिए मुख्यतः निम्न उपाय ज्योतिष अनुसार हो सकते हैं-

- 1- लग्न भाव को प्रबल करना, लग्नेश कमजोर है तो उसकी उपासना करना, रत्नधारण करना चाहिए। क्योंकि जन्म कुण्डली में लग्न को अधिक महत्व है यह एक ऐसा मुख्य स्रोत है जो सभी भावों को अपना बल देता है जिस प्रकार बिजली का ट्रांसमीटर सभी कमरों में रोशनी देता है वही रोल लग्न और लग्नेश का होता है।
- 2- पंचम भाव को प्रबल करना- पंचम भाव बुद्धिबल का है यह किसी कार्य को





डॉ. नरेन्द्र कुमार 'भैया' रमलाचार्य

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में बिना कुण्डली के यानी कि ज्योतिष शास्त्र के पासे जिसे अरबी भाषा में “कुरा” कहते हैं। यदि स्त्री प्रश्नकर्ता हो तो सबसे अच्छा रहता है। यदि किसी कारण वश स्त्री प्रश्नकर्ता ना हो तो उसके पति के द्वारा प्रश्नपासे के द्वारा किया जा सकता है। यदि ये महाशय भी ना हो तो माता-पिता के द्वारा भी पासे डाले जा सकता है। उन पासों के मुताबिक बनाए गये प्रस्तार (जायचे) के अनुसार मार्ग दर्शन व समाधान प्राप्त होता है। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में इस प्रश्न के अतिरिक्त किसी भी प्रश्न में जातक का नाम, माता-पिता का नाम, जन्म-तिथि, वार, घडी और तो और पंचांग की आवश्यकता नहीं होती है। मात्र पासे द्वारा ही प्रश्न करवाकर उक्त प्रश्न का सन्तान सुख और कैसे हो बाबत् मार्ग दर्शन व समाधान प्राप्त किया जा सकता है। यह सारी कार्य प्रणाली जातक के रमलाचार्य के सम्मुख होती है मगर रमल ज्योतिष का विद्वान ना होने की स्थिति में “प्रश्न-फार्म” के

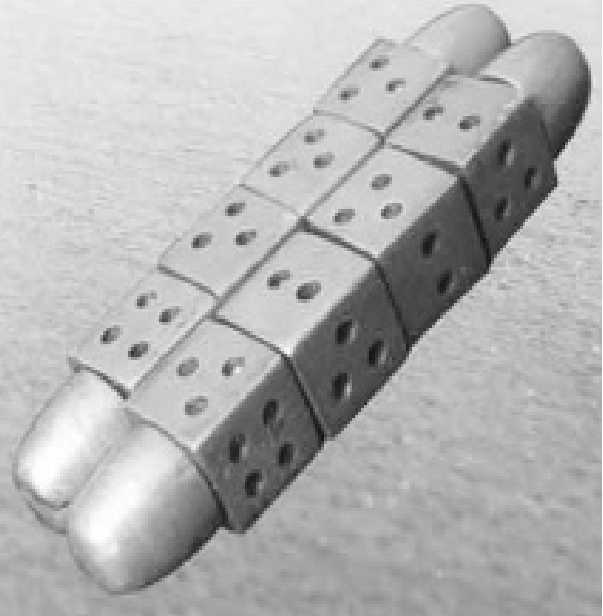
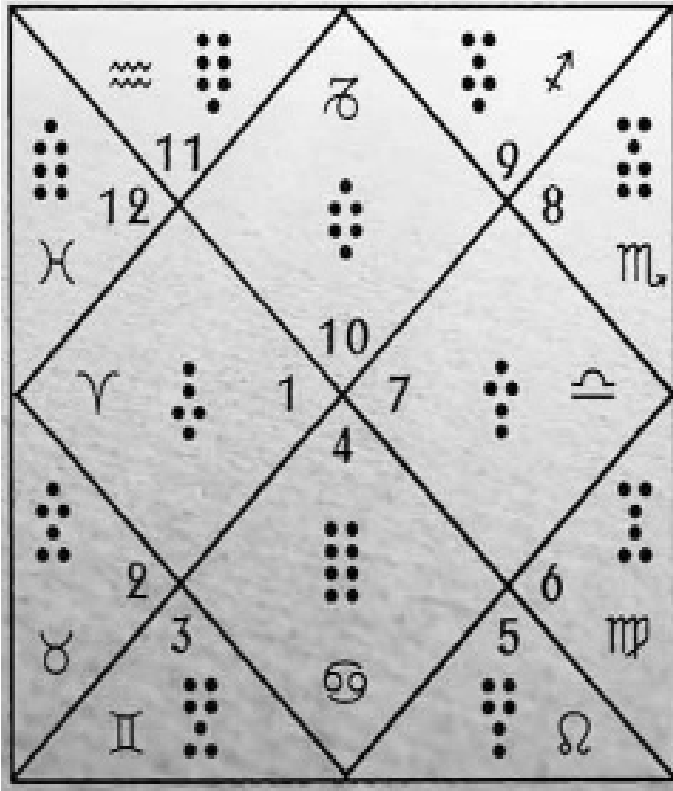
रमल ज्योतिष बताएगा सन्तान सुख कब



माध्यम से भी उक्त कार्य को सम्पादित किया जा सकता है। यह दोनों कार्य प्रणाली एक ही है मगर गणितीय स्थिति अलग-अलग अवश्य है। जो कि प्रत्येक कार्य बात में विभिन्न समयनुसार आती रहती है।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में प्रस्तार (जायचे) के प्रथम, पांचवे, छठे घर में यदि शुभ शकलें हो और सारक्षी घर भी शुभ हो साथ ही नजर-ए-मिकारना भी हो व निकटवर्ती व दूरवर्ती साक्षी शुभ हो तो सन्तान विशेष सुन्दर सुशील, भाग्यशाली और परिवारजनों की भाग्यहीनता को नष्ट करने वाली, रंग साफ गोरा होती है। यदि इसके विपरीत हो और नजर-ए-तसदीर की दृष्टि हो तो

सन्तान परिवार की सुखीयाजाता, भाग्यशालीता को भाग्यहीनता में तब्दीली करने में सहायक होती है। शिशु का रंग कुरूप होता है। यदि प्रश्नकर्ता के प्रस्तार में शकल जमात लग्न पर दृष्टि रखती हो तो सन्तान विकलांग होती है। यदि पंचम घर में अशुभ शकलें हो व छठे घर में किसी प्रकार से अशुभ शकल हो तो सन्तान के अतिरिक्त स्त्री की किसी दुष्ट आत्मा की नजर यानी कि छाया (साया) होना स्पष्ट रूप से होना पाया दिखाई देती है। जिससे प्रश्नकर्ता स्त्री को शारीरिक-मानसिक-आर्थिक और पारिवारिक साथ ही दाम्पत्य जीवन में बराबर परेशानी व टकराव रहने का योग स्थायी



तौर पर कायम होता है। प्रश्नकर्ता को सन्तान सुख के अतिरिक्त मन का उदासीनता व तनाव ग्रस्त स्थिति भी होना पायी जाती है। साथ ही जीवन बराबर असंतुष्ट और टकरावमय जिससे शोकाकुल की स्थिति में स्थायी तौर पर होना दिखाई देती है। यदि प्रस्तार के अष्टम घर में शकल फरह हो यह शकल तुला राशि की है व स्त्री संज्ञक से संबंधित रखती है साथ ही मुनकलिब शकल है। यह स्थिति में प्रश्नकर्ता को सन्तान सुख विशेष ही परेशानी के साथ ही वृद्ध अवस्था में होगी। यदि प्रस्तार में अधिकांशतः शकलें इज्जतमा और जमात हो तो पुरुष के वीर्य में सन्तान्पोपत्ती के शुक्राणु की कमी होने के

कारण सन्तान सुख प्राप्ति का योग नहीं होता है। यदि उसी प्रस्तार के दशम घर में महान अशुभ शकलें कब्जुल खारिज, अतवे खारिज हो व मिकारना की दृष्टिपात हो तो प्रश्नकर्ता को इस वास्ते चिकित्सक द्वारा दी जाने वाली दवाओं से लाभ और वांछित शान्ति का योग भी नहीं होना पाया जाता है।

यदि प्रश्नकर्ता के प्रस्तार के छठे घर में इज्जतमा व जमात शकल हो जो कि बुध ग्रह की साबित शकलें हैं। जो कि उक्त जातक को किसी प्रेत-आत्मा (मसान) की दृष्टिता नजर (छाया) का स्पष्ट रूप से संकेत देती हैं। जिससे गर्भधान में परेशानी व गर्भपात का बराबर भय साथ ही गर्भपात से होने वाली बीमारियों की आशंका बनी

रहती है। जिससे शिशु सन्तान को तो हानि होती है। यदि प्रस्तान के अष्टम घर में उक्ला शकल हो जो कि शनि ग्रह की महान शकल है माता को भी जीवनकाल की बावत मृत्यु योग बनाती है।

प्रश्नकर्ता को इन समस्त स्थिति द्वारा मार्ग दर्शन होने के वाबजूद यह जानना आवश्यक है कि वर्तमान में किस ग्रह की प्रतिकूलता (अशुभता) बराबर चल रही है। जिससे उक्त सन्तान सुख की वाबत लाभ-हानि द्वारा समाधान हो सके। इस वास्ते जातक रमल सिद्धयन्त्र धारण करें अथवा उस ग्रह के वास्ते नग या ग्रह शान्ति विधि-विधान द्वारा कराने से लाभ व शान्ति प्राप्ति होती है।

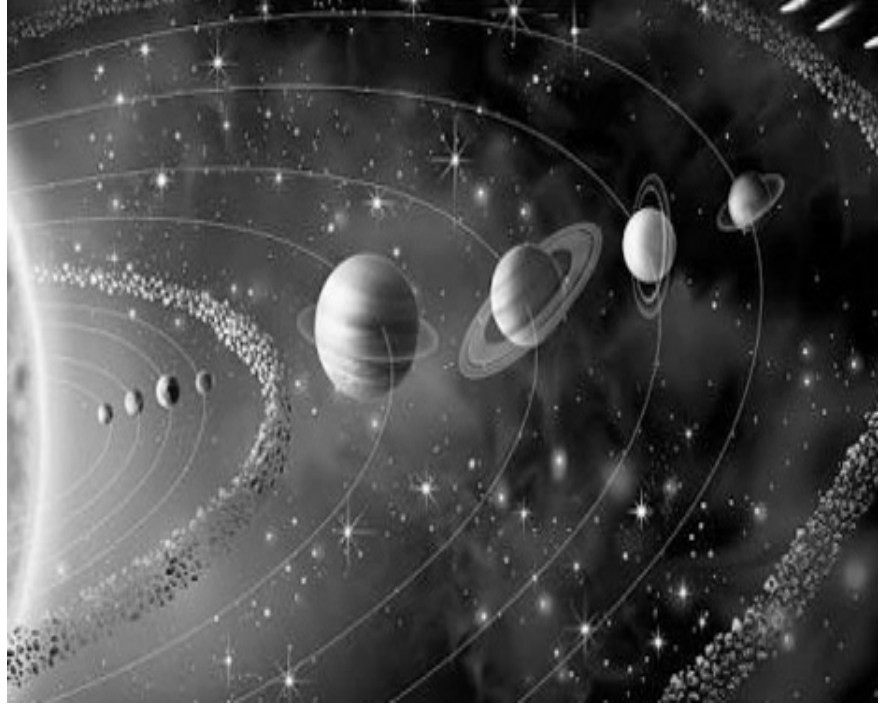
ग्रहों का राजा सूर्य अपने प्रकाश से हमें क्या-क्या देता है?

ज्योतिष में आत्मा का कारक सूर्य और मन का कारक चंद्रमा बताया गया है, तथा यह दोनों ही ज्योतिष शास्त्र में मूल आधार है जैसे सूर्य का प्रकाश हमारे पूरे ब्रह्मांड में रोशनी देता है, इसी के कारण दिन और रात होते हैं दिन में व्यक्ति सक्रिय होकर रोजगार में संलग्न होकर अपने आयवर्द्धक कार्यों को करता है जिसे कि उसे परिवार को भरण पोषण में मदद मिलती है।

अक्सर कहा जाता है कि दिन कार्य करने के लिए होता है, तथा रात्रि आराम करने के लिए होती है, इसका पालन करना ही हमारे स्वास्थ्य के लिए उत्तम प्रतीत होता है।

सूर्य की नियमितता से शिक्षा ग्रहण करे: यदि नियमित रूपसे प्रतिदिन का चक्र जिसमें दिन और रात्री के अनुसार कर्म का बटवारा करते हुए बना रहे तो व्यक्ति निश्चित रूप से अपने सभी कार्य नियमित रूप से करते हुए चिंता मुक्त रहेगा और इसके फलस्वरूप स्वस्थ रहेगा क्योंकि वह समय पर सोता है तथा दिन में काम करने के समय अपने कार्य में संलग्न रहता है। सूर्य के नियमितता के कारण ही सूर्य को आत्मा का कारक माना जाकर प्रथम भाव जिसे हमारे शरीर का भाव माना जाता है, का कारक ग्रह सूर्य को ही माना जाता है।

सूर्य की रोशनी विटामिन डी की पूर्ति करती है : नियमित रूपसे धूप का सेवन करने से शरीर में विटामिन डी की पूर्ति होती है। शरीर में हड्डियों के विकास में मदद मिलती है। जिन



व्यक्तियों को अवसाद अर्थात् डिप्रेशन हो, उसकी शिकायत को उसे भी दूर करता है सादगी शरीर में कैल्शियम की इसपर को भी स्तर को ही बनाए रखता है। गर्भवती महिलाओं को भी गर्भ में पल गए बच्चे की हड्डियों की मजबूती देता है। तथा गर्भावस्था के दौरान डायबिटीज की शिकायत भी नहीं होने देता है।

हड्डियों के दर्द को दूर करने में सहायक : हड्डियों के दर्द के लिए जैसे तो चिकित्सक का उपचार आवश्यक होता ही है किंतु यदि रोग उत्पन्न ही ना हो उसके पहले से ही सावधानी रखें तो सूर्य की रोशनी अर्थात् धूप में बैठ कर धूप का सेवन करते रहना चाहिये। इससे केलसीयम का स्तर संतुलित रहकर हड्डियों से उत्पन्न होने वाली बीमारियों से बचा

जा सकता है।

अधिक तनाव रखने वालों को राहत : सूर्य ग्रह क्योंकि आत्म तत्व का कारक है अतः इसकी रोशनी अर्थात् धूप में बैठकर धूप का सेवन करने से आत्म बल प्रबल होता है, तथा अकारण तनाव रखने वालों में भी आत्म बल की वृद्धि होकर तनाव मुक्त होता है, यहां तक कि डिप्रेशन वाले लोगभी लाभान्वित होते हैं। कहने का आशय है कि सूर्य ग्रह जिसे पंचदेवताओं में से एक देवता माना गया है के सानिध्य में रहना चाहिए, जिससे जीवन में प्रसन्नता और समृद्धि प्राप्त होती है, वास्तुशास्त्र में तो सूर्य की रोशनी मकान में प्रवेश कर सके इसके लिए पूर्व मुखी भवन का निर्माण सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

उच्च स्तरीय ज्योतिष रिसर्च संस्था भोपाल द्वारा

निःशुल्क ज्योतिष सम्मेलन संपन्न



उच्चस्तरीय ज्योतिष रिसर्च संस्था द्वारा एकदिवसीय निशुल्क राष्ट्रीय सम्मेलन दिनांक 30 दिसंबर 2018 रविवार को भोपाल स्थित राजीव गांधी कॉलेज और ओरामाल के पास त्रिलंगा भोपाल में आयोजित किया गया। इसमें देश भर के विविध भागों से लगभग 200 विद्वान सम्मिलित हुए ज्योतिष विषय में कई महत्वपूर्ण जानकारियां विद्वानों द्वारा प्रदान की गईं जो कि फलित ज्योतिष अंतर्गत लाभदायक होकर ज्ञानवर्द्धक रही। विद्वानों द्वारा विभिन्न राजनीतिक दलों के गठन के समय की बनी हुई कुंडली पर अध्ययन किया तथा अपना भविष्य लिखित में संस्था के पदाधिकारी को प्रदान किया गया जिसका संकलन कर विश्लेषण किया जावेगा। सम्मेलन के समय कुछ अज्ञात कुंडलियों पर भी भविष्य देखने हेतु दी गईं, जिनका उपस्थित विद्वानों द्वारा सही निरूपण किया गया। कुछ हस्त रेखा शास्त्री द्वारा भी हस्त रेखाओं

का अध्ययन उपरांत उपस्थित जन समुदाय को जानकारी दी गई जो सही पाई गई। संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य लोकेश शर्मा तथा राष्ट्रीय महामंत्री श्री एच एन राव द्वारा बताया गया कि इस प्रकार का आयोजन इस संस्था द्वारा पहली बार हुआ है जिस में उपस्थित जन समुदाय को जन्म कुंडली एवं हस्तरेखा द्वारा सही भविष्य निदान किए जाने की पुष्टि उपस्थित जन समुदाय ने की है।

संस्था के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री प्रमोद पांडे, राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री मंथन शाडिल्य राष्ट्रीय सचिव श्री कुशाल तथा राष्ट्रीय प्रचार सचिव आचार्य रजनी निखिल ने अपने विचार व्यक्त किए। उल्लेखनीय है कि इस सम्मेलन में भोपाल के विशिष्ट ज्योतिषी श्री विद्या भूषण सिंह, श्री सीआर शर्मा गौतम गुरुजी, श्री विनोद गोतमजी पंचाग कर्ता, श्री सीएल चौरे, श्री कृपाराम उपाध्यायजी तथा जयपुर से आए श्री केके ओझाजी द्वारा भी अपने

विचार व्यक्त किए।

जीवन वैभव त्रैमासिक पत्रिका के संपादक डॉ. हेमचंद्र पांडेय द्वारा भी सम्मेलन में उपस्थित विद्वानजनों को संबोधित किया। जिसमें फलित ज्योतिष, वास्तु एवं कर्मकांड विषय पर भी अपने विचार व्यक्त किए। साथ ही अवगत कराया कि फलित ज्योतिष का अध्ययन के पहले सिद्धांत ज्योतिष के गणित एवं भौगोलिक ज्ञान का अध्ययन भी फलित हेतु आवश्यक होता है, जिससे कि देश काल के अनुसार भविष्यफल कथन किया जा सके। अंत में संस्था द्वारा विद्वान ज्योतिषियों का पुष्पमाला पहनाकर सम्मान स्वरूप प्रमाण पत्र प्रदाय किये गये। बाहर से आने वाले उपस्थित विद्वानों ने कार्यक्रम के व्यवस्थित संचालन के लिए प्रसन्नता व्यक्त की। सभी विद्वानों का आभार व्यक्त करते हुए सम्मेलन के समापन की घोषणा संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा की गई।

- आशुतोष पाण्डेय, सहायक सम्पादक

सद्विचारों का भंडार है रामचरित मानस

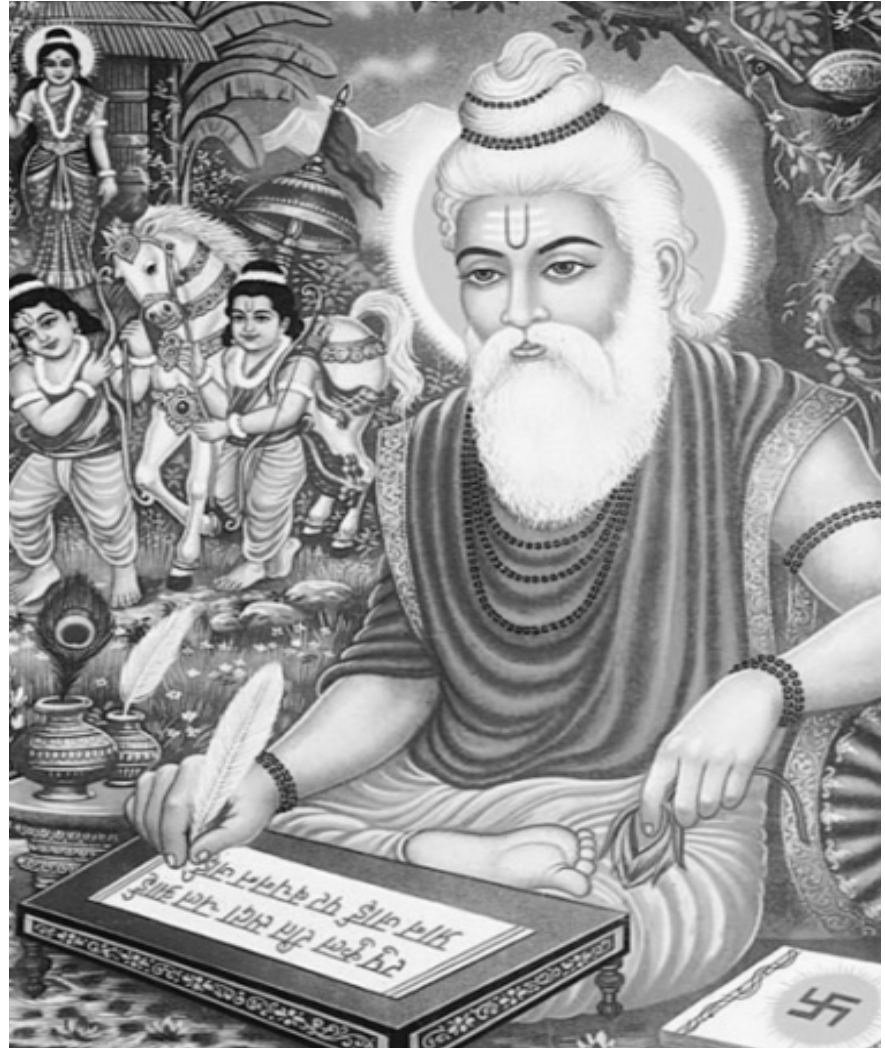
संतोष श्रीवास्तव

वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व में अशांति, तनाव व्याप्त है, हर व्यक्ति परेशान नजर आता है। इसके मूल में यदि हम जायें तो पायेंगे कि आज मानवीय जीवन से सद्विचारों का क्षरण हो रहा है। लाल, स्वार्थपन, हिंसा व्याप्त होती जा रही है ऐसे समय में आवश्यकता होती है एक ऐसे मार्गदर्शक प्रकाश स्तंभ की जो भटके को राह दिखा सके और उसे जीवन पथ पर अग्रसर कर सके। इस दृष्टि से हम देखें तो पायेंगे कि भारतीय संस्कृति, चिन्तन और दर्शन की अद्वितीय परिचायक रामचरित मानस सद्विचारों की खान है। चाहे राजनैतिक क्षेत्र हो या सामाजिक, पारिवारिक सभी क्षेत्रों में मानवीय जीवन का पथप्रदर्शन करने वाली और सद्विचारों से परिपूर्ण करने वाली रामचरित मानस ही है।

राम एक मर्यादा है, एक प्रतीक है सद्विचारों का, सच्चाई का, पवित्रता का, झूठ, अहंकार, कुटिलता का त्याग और मानवीय सद्गुणों का समावेश रामचरित मानस ही करा सकती है।

“राम” एक शक्ति है, जिसको सच्चे मन से याद करने या आवाहन करने से माया जाल में फंसा व्यक्ति इस भवसागर से तर जाता है और सद्विचारों का समावेश उसमें हो जाता है।

जासु नाम सुमिरत एक बारा।
उतरहिं नर भवसिंधु अपारा ॥



आवश्यकता इस बात की है कि हम रामचरित मानस का गहन अध्ययन करें, जिस तरह हंस मोती चुगता है, उसी प्रकार पाठक रूपी हंस रामचरित मानस से मोती रूपी सद्विचारों को चुने और उन्हें जीवन में ग्रहण करें। सद्विचारों को ग्रहण करने से मन पवित्र हो जाता है। छल, कपट से मुक्त हृदय में ही भगवान राम निवास करेंगे।

मिलहिं न रघुपति बिनु अनुरागा।

किएँ जोग तप ग्यान बिरागा ॥

भारतीय परम्परा एवं संस्कृति के

अनुसार अपने से बड़े एवं ईष्ट पूज्यनीय एवं वंदनीय हैं। यहीं से शुरु होती है, रामचरित मानस की सद्विचारों की शृंखला। ईश्वर उपासना किये बिना और सद्विचारों को अन्तःमन में स्थान दिये बिना मानव मन शांत नहीं हो सकता है। संपूर्ण विश्व को चलायमान रखने वाली शक्ति भगवान “राम” ही हैं और उनकी उपासना के लिए जरूरी है कि पहले सद्विचारों को जीवन में ढाला जाये। इसके बाद फिर सच्चे मन से “राम” की वंदना कीजिये।



बंदउँ नाम राम रघुबर को। हेतु
कृसानु भानु हिमकर को ॥
बिधि हरि हरमय बेद प्रान सो।
अगुन अनूपम गुन निधान सो ॥
“राम” की बात जहां-जहां हो जाये,
वहां-वहां सुख-शांति का वास हो
जाता है। लेकिन राम का वास
होगा कहाँ? राम के वास के लिए
जरूरी है कि मन निष्कपट हो
और उसमें सद्विचारों का
समावेश हो। सद्विचारों से
परिपूर्ण मन की पवित्रता राम को
हृदय में बसाने के लिए आवश्यक
है। बिना किसी दिखावे, आडम्बर
के शुद्ध मन से “राम” को याद
किया जाये, उनका स्मरण किया
जाये और सद्विचारों को मन में
स्थान दिया जाये। फिर देखिये
संपूर्ण विश्व राममय दिखाई
देगा।

राम देखि सुनि चरित तुम्हारे। जड़

मोहहिं बुध होहिं सुखारे ॥ तुम्ह जो
कहहु करहु सबु साँचा। जस काछिअ
तस चाहिअ नाचा ॥
पूछेहूँ मोहि कि रहाँ कहँ
मैं पूँछत समुचाऊँ।
जहँ न होहु तहँ देहु महि
तुम्हहि देखावों ठाऊँ ॥

जब संपूर्ण विश्व ही राममय हो
जायेगा तब यह प्रश्न ही नहीं रह
जायेगा कि राम कहां वास
करेंगे। वह तो हर सच्चे भक्त के
हृदय में निवास किये हुये हैं। बस
आवश्यकता है तो इस बात की
हृदय में सद्विचार हों, मन पवित्र
हो... और जीवन में छल, कपट,
दिखावे का कोई स्थान न हो।

सामाजिक परिवेश में यदि हम देखें
तो पायेंगे कि सद्विचारों के
माध्यम से ही संयुक्त परिवार
सफलतापूर्वक चल सकते हैं,
जिसका अच्छा उदाहरण प्रस्तुत

किया है, रामचरित मानस ने।
पिता-पुत्र का संबंध, गुरु-शिष्य
का संबंध, भाई-भाई का संबंध,
सेवक के दायित्व, माता-पुत्र के
संबंध जैसे अनेकों प्रस्तुतियां
मिलती हैं। रामचरित मानस के
मूल में यदि हम जायें तो
सद्विचारों की खान ही दृष्टिगोचर
होती है।

काम कोध मद मान न मोहा। लोभ
न छोभ न राग न द्रोहा ॥

जिन्ह कें कपट दंभ नहिं माया।

तिन्ह कें हृदय बसहु रघुराया ॥१॥

बहुत ही सुंदर तरीके से सामाजिक
परिवेश में प्रस्तुत किया है। दहेज
समस्या को। जिन वस्तुओं की
आवश्यकता नये घर को बसाने
के लिए होती है, उन्हीं मूलभूत
वस्तुओं को अपनी क्षमता के
अनुसार दिया जाना चाहिए।
इसके लिए मांग जैसी कोई बात
नहीं है। इसी प्रकार नव-वधु को
उसी प्रकार घर में स्थान देना
चाहिए जैसे कि आंखों में पुतली
की रक्षा करती।

दाइज अमित न सकिअ कहि दीन्ह
बिदेहँ बहोरि। जो अवलोकत
लोकपति लोक संपदा थोरि ॥

कोसलपति समधी सजन सनमाने
सब भाँति। मिलनि परसपर बिनय
अति प्रीति न हृदयें समाति ॥

नृप सब भाति सबहि सममानी,
कहि मृदु वचन बोलाई रानी

इस दृष्टि से देखा जाये तो सामाजिक
क्षेत्र की जो मुख्य समस्या आज
हमारे समाज में दृष्टिगोचर हो
रही है, उसका समाधान यदि
रामचरित मानस के अंतर्गत
सद्विचारों को ग्रहण करते हुए
किया जाये तो आज समाज में
दहेज प्रथा जैसी बुराई का अंत
हो जायेगा और नव बंधन
उन्मुक्त जीवन जी सकेगी।

स्वास्थ्य रहना सबसे अधिक सुखी जीवन

हमारे दैनिक जीवन में व्यस्तता रहना आवश्यक है अपने काम में व्यस्त रहने पर व्यर्थ के विचार, मानसिक तनाव आदि नहीं होते एवं इसके फलस्वरूप व्यक्ति अपने जीवन में नियमितता रखता है और स्वस्थ रहता है।

यह देखा गया है कि जब लोग नौकरी, व्यवसाय अथवा उद्योग में लगे रहते हैं तब तक स्वास्थ्य ठीक रहता है और जैसे ही इन कामों से रिटायर हुए और अपनी सेवानिवृत्ति का जीवन जीने लगते हैं तो प्रायः अस्वस्थता उन्हें घेर लेती है क्योंकि वे काम के रहित जीवन जीते हैं उनकी कार्य करते समय की सोच जिसमें प्रायः यह विचार करते हैं कि रिटायर्डमेंट के बाद तो निश्चिन्त होंगे और प्रसन्नता से परिपूर्ण चैन की जिन्दगी जिएंगे, लेकिन काम के रहित रहना शरीर को कमजोर कर देता है किसी भी कार्य को उत्साहपूर्ण नहीं करने से भी वह कार्य की श्रेणी में नहीं माना जा सकता है। अतएव कार्य से संलग्न रहना ही वास्तव में चैन की जिन्दगी जीना कहलाता है। क्योंकि दैनिक जीवन में हमें जिस प्रकार भोजन करना, शौच करना, रात्रि में सोना तथा दिन में अपने काम में लगे रहना ही वास्तव में सुखी जीवन की निशानी है। जिस प्रकार खाने और शौच करने की छुट्टी नहीं कर सकते उसी प्रकार दिन में अपने नियमति काम करने की भी आवश्यकता होती है।

1- अपने दैनिक जीवन की दिनचर्या बनाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि शरीर को थकान और कार्य से ऊब जाना तभी होगा जब कि एक ही कार्य को आप लगातार करते रहेंगे लेकिन कार्य की प्रकृति के बदलाव के साथ ही आपकी थकान दूर हो जाएगी और नए कार्य के करने से एक प्रकार की नई प्रसन्नता उत्पन्न होने लगेगी। अतः अपने प्रत्येक कार्य का बटवारा ठीक



“
हमारा पाचन तंत्र सही कार्य करता रहे इसे दृष्टिगत रखते हुए भरपेट भोजन करने के स्थान पर एक चौथाई भाग पेट का खाली रखना चाहिए ताकि सुव्यवस्थित ढंग से पाचन हो सके। कम आहार के कारण कोई व्यक्ति दुबला नहीं होगा बल्कि पाचन तंत्र के द्वारा सही ढंग से खाया हुआ अन्न को पचा सकेगा और आवश्यक रस शरीर के अंगों को प्राप्त हो सकेंगे। अपच नहीं होने से वायुविकार, पित्तविकार पर नियंत्रण रहेगा। स्वस्थ रहने के लिए शरीर को स्वच्छ रखना जरूरी है। पाचनतंत्र के सुव्यवस्थित संचालन के लिए आवश्यक है कि खाया गया अन्न का सुपाच्य हो सके तथा समय पर मल मूत्र का विसर्जन हो सके।”

उसी प्रकार करते रहना चाहिए। कोई कठिन कार्य है तो उसके साथ हलका फुलका कार्य को जोड़ा जाकर व्यस्तता रखी जा सकती है। इससे हमें कार्य में आनन्द आएगा तथा व्यस्तता बनी रहेगी और स्वस्थ महसूस करेंगे।

2- जब भी हम अपने दैनिक जीवन में सवेरे, दिन में तथा शाम को आहार लेते हैं उसे प्रसन्न मन से करें। क्रोधावेश में तथा अरुचि के साथ भोजन करने पर शरीर में लाभ के स्थान पर हानिप्रद सिद्ध होगा। जो भोजन करने को हमें रुचि नहीं है उसे जबरन थाली में लेना और झूठन छोड़ना भी अन्न का एक प्रकार से तिरस्कार है जो कि नहीं करना चाहिए।

3- आवश्यकता से अधिक भोजना करना भी स्वास्थ्य के प्रति अहितकर है। किसी के भी आग्रह पर अपने पेट से अधिक भोजन नहीं करना चाहिए। प्रेमभाव से अधिक स्वादिष्ट भोजन की परोसदारी मित्र अथवा रिश्तेदार लोग करते हैं लेकिन अपच की शिकायत तथा स्वास्थ्य में खराबी नहीं हो इसलिए बड़ी नम्रतापूर्वक सामने वाले के आग्रह को मना कर देना चाहिए, यदि असमंजस में या स्वाद को देखते हुए भोजन की मात्रा अधिक ली गई तो उसके बाद स्वयं को कष्ट उठाना पड़ता है।

4- स्वस्थ रहने के लिए आहार की मात्रा कम रखें- हमारा पाचन तंत्र सही कार्य करता रहे इसे दृष्टिगत रखते हुए भरपेट भोजन करने के स्थान पर एक चौथाई भाग पेट का खाली रखना चाहिए ताकि

सुव्यवस्थित ढंग से पाचन हो सके। कम आहार के कारण कोई व्यक्ति दुबला नहीं होगा बल्कि पाचन तंत्र के द्वारा सही ढंग से खाया हुआ अन्न को पचा सकेगा और आवश्यक रस शरीर के अंगों को प्राप्त हो सकेंगे। अपच नहीं होने से वायुविकार, पित्तविकार पर नियंत्रण रहेगा।

5- शरीर की स्वच्छता की आवश्यकता- स्वस्थ रहने के लिए शरीर को स्वच्छ रखना जरूरी है। पाचनतंत्र के सुव्यवस्थित संचालन के लिए आवश्यक है कि खाया गया अन्न का सुपाच्य हो सके तथा समय पर मल मूत्र का विसर्जन हो सके। मल और मूत्र के विसर्जन को यदि हम समय पर करते रहें तो शरीर के अंदर की स्वच्छता बनी रहेगी तथा बाहरी स्वच्छता के लिए नियमित स्नान, दांतों की सफाई, मुंह और जीभ की सफाई करते रहने से हमारे मुंह से दुर्गन्ध नहीं आएगी और जनसामान्य में हमारे बारे में स्वच्छता का उत्तम प्रभाव रहेगा। स्नान के बाद हमारे साफ सुथरे वस्त्र जिनमें पसीने की गंध नहीं आती हो, पहनना स्वास्थ्य के लिए हितकर होगा। साथ ही जहां हम निवास कर रहे हैं उस निवास स्थान का परिसर भी साफ सुथरा रखना चाहिए, झाड़बुहार करने तथा आवश्यकतानुसार लीपाई, पुताई किए हुए मकान में निवास करना चाहिए।



जिससे हम व्यर्थ की दुर्गंध से दूर स्वच्छ वातावरण में रहते हुए स्वस्थ रह सकें।

6- गहरी सांस लेना आवश्यक- हमारे स्वस्थ शरीर के लिए हमें प्रत्येक समय गहरी सांस लेना चाहिए ताकि फेफड़ों को शुद्ध हवा मिलकर फेफड़ों की सक्रियता बनी रहे सके। यदि गहरी सांस नहीं ली गई तो फेफड़े का बड़ा भाग निष्क्रिय रहेगा और उसके निष्क्रिय होने से श्वास, खांसी आदि

रोग के कीटाणु उत्पन्न होते रहेंगे तथा अन्ततो गत्वा व्यक्ति क्षय रोग तक का शिकार बन सकता है। अतएव नाक से गहरी सांस लेते रहना चाहिए इसके लिए सवेरे तथा शाम को टहलना चाहिए। जिससे कि शुद्ध वायु शरीर में प्रवेश करके आमाशय, फेफड़े, हृदय, लीवर आदि का व्यायाम स्वतः होकर स्वस्थ रह सके।

7- सदैव प्रसन्न रहने का प्रयास करें- अपने जीवन में स्वस्थ रहने के लिए सदैव प्रसन्न रहने की आदत डालना चाहिये। हमारे प्रसन्न रहने से हमारे आसपास का वातावरण भी प्रफुल्लित रहेगा तथा हमें समाज में विशिष्ट महत्व मिलेगा। मन में अप्रसन्नता तथा उदासीन चेहरे वाले व्यक्तित्व को कभी समाज महत्व नहीं देता और अधिक निराशा और चिंताओं के भाव बने रहेंगे। ऐसे लोगों के मित्र भी कम रहेंगे। इसके विपरीत प्रसन्न रहने के स्वभाव की सभी ओर से सराहना होगी। साथ ही प्रसन्नता की आदत एक अच्छे स्वास्थ्य का निर्माण करने में मददगार होगी।



आयुर्वेद चिकित्सा के कुशल वैद्य श्री सोहनलाल जी शर्मा, महाजन, बीकानेर (राजस्थान) के द्वारा प्रकृति से प्राप्त विभिन्न फलों से स्वास्थ्य के बारे में जानकारी देते हुए फलों के नियमित सेवन पर ध्यान देने की सलाह दी है ताकि हमें अपने जीवन में शारीरिक रूप से सक्षमता प्राप्त हो सके तथा स्वस्थ रह सकें।

- संपादक

नींबू- नींबू का सेवन हर मौसम में किया जा सकता है। यह बदलते मौसम के अनुरूप ही अपने गुणों का समायोजन कर मौसमी दोषों से



बचाता है। नींबू का मुख्य काम शरीर के विष को नष्ट कर उन्हें बाहर निकालना है।

नारंगी- नारंगी या संतरा ठण्डा, तन-मन को प्रसन्नता देने वाला है। उपवास और सभी रोगों में नारंगी दी जा सकती है। जिनकी पाचन शक्ति कमजोर हो व खराब हो, उनको नारंगी का रस तीन गुने पानी



में मिलाकर देना चाहिए।

मौसबी- मौसबी निरापद आहार है। सभी प्रकृतिवालों को और सभी अवस्थाओं में इसका सेवन

अनुभव का अमृत

लाभदायक है। भूख की स्थिति में इसका सेवन अमृत तुल्य है और भरपेट में भोजन का पाचन करती है। मौसबी का रस पाचन, मस्तिष्क और यकृत को शक्ति तथा स्फूर्ति देता है।

आंवला- आंवले में सारे रोगों को दूर करने की शक्ति है। आंवला युवकों को यौवन प्रदान करता है और बूढ़ों को युवा जैसी शक्ति प्रदान करता है। गर्मियों में चक्कर आते हों, जी घबराता हो तो आंवले का शर्बत पीना चाहिए, इससे शीघ्र लाभ होता है। आंवला दाँतों व मसूड़ों को मजबूत बनाता है। वायु विकार को दूर करता है।

किशमिश- यह अण्डकोष वृद्धि व अण्डकोश में पानी भरकर फूल जायें तो नित्य किशमिश खाने से अच्छा लाभ होता है।

केला- केला भूखे पेट नहीं खाना चाहिए। भोजन के बाद केला खाने



से ताकत देता है। मांसपेशियाँ मजबूत होती हैं। केला वीर्यवर्द्धक, शुक्रवर्द्धक है। नेत्र रोगों में लाभदायक है। केला शक्तिदायक खाद्य है। केला केवल फल नहीं इसको रोटी की जगह खाना चाहिए अर्थात् केला अपने में संपूर्ण आहार है। छोटे बच्चों को इसे दूध में मिलाकर दें। केला कफ व पित्तनाशक औषधि

है।

जामुन- जामुन प्रयोग करने से जिन बच्चों को बिस्तर में पेशाब करने की आदत हो गई हो तो चाहे लड़का हो



या लड़की, जामुन की गुठली को पीसकर एक चमच पानी के साथ लेने से यह रोग दूर हो जाता है। इसका चूर्ण सुबह-शाम पानी के साथ लेने से स्वप्नदोष ठीक हो जाता है। खूनी दस्त आते हो तो भी इसका चूर्ण फायदा करता है।

अनार- अनार सब फलों में उत्तम है। अनार हर प्रकार के रोगों में दिया जा सकता है। अनार के छिलके को सुखाकर बारीक पाउडर (चूर्ण) बनाकर गुलाबजल के साथ मिलाकर उबटन करने से शरीर के दाग चेहरे की झाईयाँ भी नष्ट हो



जाती हैं। अनार खट्टी-मीठी होने से पाचनशक्ति बढ़ाता है। मूत्र लाती है। महिलाओं के मासिक स्राव अधिक होता है तो छिलके का चूर्ण बनाकर

1-1 चमच ठण्डे पानी में देने से रक्तस्राव बन्द हो जाता है।

पपीता— पपीता भोजन के बाद खाना चाहिए। पाचन संस्थान के रोगों में पपीता खाना बहुत उपयोगी है। माताओं को कच्चे पपीते की सब्जी



खिलाने से स्तनों में दूध की वृद्धि होती है। पका हुआ फल भी लाभदायक है। पपीते का दूध दाद पर लगाने से लाभ होता है। पपीता पेट साफ करता है, लीवर का ताकत देता है। छोटे बच्चों के लीवर खराब हों तो उन बच्चों को पपीता खिलाने से अच्छा लाभ होता है।

इमली— इमली के पके हुए गूदे को हाथ और पैरों के तलवों पर मलने से लू का असर मिटता है। एक गिलास पानी में 25 ग्राम इमली को भिगोकर



इसका पानी पीने से गर्मी में लू नहीं लगती तथा फोड़े-फुन्सी होने पर इमली को एक गिलास पानी में मथकर मिलाकर पीने से भी लाभ होता है। एक गिलास पानी में स्वाद के अनुसार इमली और शक्कर भिगोकर 1 घण्टे बाद पीने से यह उत्तम पेय है।

नारियल— नारियल का पानी पीने से व

कच्चा नारियल खाने से कृमि (कीड़े) निकल जाते हैं। जिन लोगों के बाल गिरते हों, नारियल का तेल सिर से बाल गिरना बंद होकर बाल लंबे हो जाते हैं। नारियल का तेल व नींबू का रस मिलाकर मालिश करने से खुजली बंद हो जाती है। नारियल की गिरी को रात में कोरी माटी की कुलड़िया में चटक भिगो दें, सुबह खाली पेट खाने से नकसीर छुटना बन्द हो जाती है।

गाजर— गाजर में शरीर के लिए पोषक तत्व होता है। इसमें कोशिकाएं व धमनियों को संजीवन करने की क्षमता होती है। गाजर के रस में जीवनदायिनी शक्ति है। गाजर के



बनिस्पत इसका रस अधिक लाभदायक है। सदा काम करते रहने से शरीर क्षीण होता रहता है, इस क्षीणता की पूर्ति हेतु गाजर में ऐसे तत्व है जो रोग दूर करते हैं। गाजर का रस पीने से पाचन संस्थान मजबूत होता है। मल में दुर्गन्ध व विषैले कीटाणु नष्ट हो जाते हैं।

खीरा— खीरा कब्ज दूर करता है। पीलिया, प्यास, ज्वर, शरीर की जलन, गर्मी के सारे दोष व चर्म रोगों में भी लाभदायक है। खीरा का रस पथरी में लाभ करता है तथा पेशाब की जलन, रुकावट और मधुमेह में लाभ करता है।

खरबूजा— खरबूजा तृप्तिकारक व बलवर्धक है। यह पसीना लाता है, पेशाब को साफ करता है। यह पेट की गर्मी और खराबी निकालता है।



गुर्दे के रोगों को मिटाता है। पथरी को निकाल देता है। गले की जलन दूर करता है। इसकी बीजों का चेहरे पर लेप करने से कान्ति बढ़ती है।

प्याज— प्याज गरीबों की कस्तूरी है। अगर मनुष्य को नींद नहीं आती तो कच्चा लाल प्याज या पकाया हुआ प्याज या राख में पकाया गया प्याज का रस दिन में 4 चमच भरकर पीने से नींद अच्छी आती है। प्याज का नियमित प्रयोग करने से नेत्रों की दृष्टि बढ़ जाती है। इसके रस को भी



आँख में डालते रहने से नेत्र ज्योति बढ़ती है। यह अत्यन्त अनुभूत औषधि है। भोजन के साथ कच्चे प्याज का सेवन अधिक मात्रा में करे से माताओं के दूध बढ़ता है। प्याज का रस मस्सों पर लगाने से मस्सा ठीक हो जाता है। गर्मी के दिनों में प्याज हर व्यक्ति अपने पास रखे तो लू नहीं लगती है और एक कच्चा प्याज नित्य भोजन के साथ खाने से कब्ज ठीक हो जाती है।

उपरोक्त सभी फलादि रुचिकर एवं स्वास्थ्यवर्द्धक हैं एवं सरलतापूर्वक प्राप्य हैं हमें इन्हें ही अमृततुल्य समझकर सेवन करना चाहिए।



दक्षिण दिशा के आवास द्वारा नैऋत्य कोण से हटाकर बनाना चाहिए। नैऋत्य कोण का द्वार शत्रुभय और आकस्मिक दुर्घटनादायक होता है। इसलिए नैऋत्य कोण का द्वार निषेध है।

भवन का उत्तर-पूर्व भाग खुला छोड़ना चाहिए। पश्चिम एवं दक्षिणी भाग को अधिक खाली नहीं छोड़ना चाहिए अन्यथा आर्थिक कष्ट, झगड़े एवं विवाद के कारण अशांति का वातावरण बना रहेगा।

घर का दक्षिणी भाग ऊँचा एवं उत्तरी भाग नीचा होना चाहिए। तात्पर्य यह है कि घर में दक्षिण दिशा की तरफ से पानी उत्तर की तरफ बहाव होना चाहिए। इससे लक्ष्मी संपन्नता और परिवार के सदस्यों में वैचारिक तालमेल उत्तम रहेगा। यदि घर अथवा कार्यालय में नल से लगातार पानी बह रहा है तो उसे तत्काल बंद करें, ठीक कराएं। वास्तु के अनुसार जल भी संपत्ति है जल का व्यर्थ बहना, आपकी धन-संपत्ति के व्यर्थ खर्च को निरूपित करता है, इसलिए पानी का नल से बहना रोकना चाहिए।

पवित्र नदी का जल किसी कलश में भरकर शुभ दिवस अथवा पूर्णिमा के दिन से अपनी नियमित पूजन के स्थान पर रखें

वास्तु-सूत्र

और पूजन करते रहें, अपने मन के संकल्पित कर्म यथासमय पूरे होंगे। कार्यस्थल याने दुकान या कारखाने में विक्रय हेतु रखा गया माल यदि वायव्य कोण में है, तो वह शीघ्र बिक जाएगा। कारखानों में उत्पादित सामग्री को



वायव्य कोण (उत्तर-पश्चिमी कोण) में रखना चाहिए जिससे कि विक्रय शीघ्र हो सके और खरीददार को खरीदे माल से संतुष्टि हो सके। उसी प्रकार दुकान

रखना चाहिए। अन्यथा पारिवारिक सदस्यों की वैचारिक असमानता के चलते परिवार के मुखिया को निर्णय की क्षमता में कमजोरी आ सकती है।

जीवन वैभव

जीवन की समृद्धि के लिए गागर में सागर

जीवन वैभव पत्रिका में विविध विषय जो कि परिवार एवं समाज के लिए उपयोगी है, इन विषयों पर सामग्री प्रकाशित की जाती है, ज्योतिष, चरित्र-निर्माण, योग, होयोपैथी, आहार चिकित्सा, धर्म, अध्यात्म आदि।

जीवन वैभव में स्थाई स्तंभ प्रत्येक अंकों में प्रकाशित होते हैं जो कि संग्रहणीय

हैं, वे इस प्रकार हैं—

वंदना, अमृतवाणी, वैभवदर्शन, गीता माता, उचित आहार, चिकित्सा, धार्मिक शिक्षाप्रद जानकारी, ज्योतिष एवं स्वास्थ्य व्रत पर्व विविध मुहूर्त, त्रैमासिक भविष्यफल।

इसके अतिरिक्त महापुरुषों द्वारा दिए गए आशीर्चन एवं अनमोल सुझाव पृथक

से बाक्स के रूप में दिए जाते हैं जो पाठकों को लाभप्रद एवं रोचक लगते हैं। इस प्रकार जीवन वैभव का प्रत्येक अंक संग्रहणीय है। अपने संस्थान का विज्ञापन दें, अपने व्यासायिक संस्थान का विज्ञापन प्रदाय करते हुए ज्ञानयज्ञ में आप अपना सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जीवन वैभव के नियमित सदस्य बनें, पृष्ठ ४३ पर प्रकाशित सदस्यता हेतु निर्धारित आवेदन पत्र की पूर्ति कर आजीवन, त्रैवार्षिक अथवा वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर जीवन वैभव परिवार में सम्मिलित हों।

जीवन वैभव उपहार में दें—

नैतिक, शिक्षाप्रद और ज्ञानवर्द्धक सामग्री के अमूल्य अंकों को उपहार में दीजिए, अपने ईष्ट मित्रों/सहयोगियों को सदस्य बनाकर।

— संपादक

अनायास मिटी जाईगो संकट तुलसी को

कृपा सिंधु ताते रहो निशिदिन मन मारे,
महाराज लाज आप ही निज जांघ उघारे ॥1॥

ले रहे मारियो चहे काम आदि संघाति,
मो बिन रहे ना मैरियेजारैछल छाती ॥2॥

बसतहिये हित जानि में सबकी रुचि पाली,
कियोंकथकको दंड हो जड़ करम पूजा कुचाली ॥3॥

देखी सुनी न आजू लो अपनायति ऐसी,
करहीसबै सिर मेरे ही फिरिपरै अनेसी ॥4॥

बड़े अलेखी लखी परैपरिहरे न जाहीं,
असमंजस में मगन हौ लीजेगहि बाहीं ॥5॥

बारक वली अवलो किए ,कौतुक जन जी को,
अनायास मिटी जाईगो संकट तुलसी को ॥6॥

भावार्थ- हे कृपा सिंधु इसीलिए में रात दिन मन मारे रहता हूं की हे महाराज अपनी जांग उखाड़ने से अपने को इलाज लगती है यह काम क्रोध लोभ आदि साथी मिले भी रहते हैं और मारना भी चाहते हैं ऐसे दुष्ट हैं यह मेरे बिना रहते भी नहीं और छल करके मेरी ही छाती जलाते हैं भाग्य की अपने ही बन कर मारते हैं यह मेरे हृदय में बसते हैं मैंने ऐसा समझकर प्रेम पूर्वक इन सब की रुचि भी पूरी कर दी है अर्थात् सब विषय भोग चुका हूं फिर भी इन दोस्तों और ऊंचाइयों ने मुझे कथक की लकड़ी बना रखा है ऐसी अपनायत आत्मीयता तो आज तक मैंने कहीं भी नहीं देखी सुनी कर्म तो करें सब आप और जो कुछ बुराई हो वह मेरे सिर्फ आवे मुझे यह सब बड़े ही अन्याय दिखते हैं पर छोड़े नहीं जाते बड़े ही असमंजस में पड़ रहा हूं अब हाथ पकड़कर आप ही निकालिए आपकी बलिया लेता हूं कृपा कर एक बार अपने इस दास का यह को दुख तो देखिए आपके देखते ही तुलसी का दुख सहज ही दूर हो जाएगा।

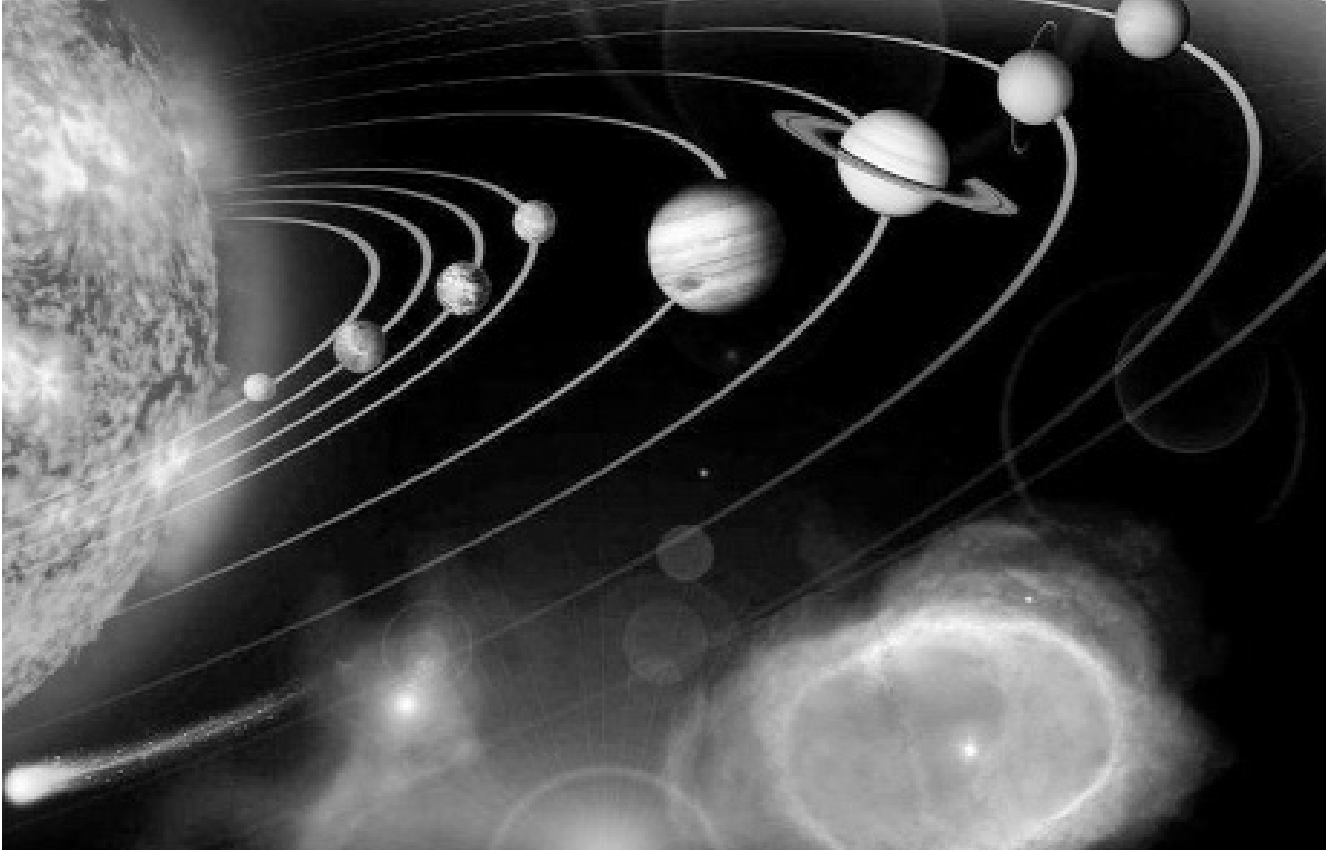
विनय पत्रिका

घोषणा-पत्र

जीवन वैभव त्रैमासिक पत्रिका के स्वामित्व तथा अन्य बातों का ब्यौरा जो प्रतिवर्ष फरवरी के अंतिम दिन के बाद वाले अंक में प्रकाशित होता है।

प्रपत्र-चतुर्थ (देखें नियम-8)

1. प्रकाशन – जीवन-वैभव
15-ए, महाराणा प्रताप नगर, जोन-1,
प्रेस कॉम्प्लेक्स, भोपाल।
 2. प्रकाशन की अवधि – त्रैमासिक
 3. मुद्रक का नाम – मेश प्रिन्ट्स
नागरिकता – भारतीय
पता – प्लॉट नं. 30, प्रथम मंजिल,
जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल
 4. प्रकाशक का नाम – प्रेमलता पाण्डेय
स्वत्वाधिकारी,
जीवन वैभव त्रैमासिकी
नागरिकता – भारतीय
पता – 15-ए, महाराणा प्रताप नगर,
जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल
 5. प्रधान संपादक का नाम – श्रीमती प्रेमलता पाण्डेय
नागरिकता – भारतीय
पता – 15-ए, महाराणा प्रताप नगर,
जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल
 6. पत्र का स्वामित्व – श्रीमती प्रेमलता पाण्डेय
नागरिकता – भारतीय
निवास स्थान – बी-14, सुरेन्द्र गार्डन,
होशंगाबाद रोड, भोपाल
- मैं प्रेमलता पाण्डेय, घोषणा करती हूँ, कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सही हैं।
प्रेमलता पाण्डेय
प्रकाशक के हस्ताक्षर
- दिनांक: 01-03-2019



त्वचा रोग और फलित ज्योतिष

(चिकित्सा ज्योतिष के अन्तर्गत शरीर को स्वस्थ रखने के बारे में हमारे द्वारा विद्वानों के अन्वेषणात्मक आलेख दिए जाते रहे हैं। विद्वान ज्योतिषियों की एक टीम जो कि पाराशरी ज्योतिष क्लास के विद्यार्थी हैं के द्वारा पं. हेमचन्द्र पाण्डेय के निर्देशन में अपने तथ्यात्मक बिंदुवार आलेख प्रस्तुत किया है जो निम्नानुसार है- **संपादक**

ज्योतिष विज्ञान के अन्तर्गत हमारे शरीर के बारे में जन्म लग्न के स्वामी को अधिक महत्त्व दिया जाता है। साथ ही षष्ठमभाव जो कि रोग का उत्पन्न करने वाला है इसके स्वामी की स्थिति का भी अध्ययन आवश्यक है।

त्वचा रोगों की जानकारी के लिए निम्नानुसार भावों का अध्ययन आवश्यक है—

भाव – लग्न भाव, षष्ठम भाव, अष्टम भाव एवं द्वादश भाव

ग्रह – सूर्य, बुध, मंगल, चंद्र, शुक्र
उपरोक्तानुसार किसी भी व्यक्ति का लग्न भाव हमारे शारीरिक स्थिति को दर्शाता है। शरीर में होने वाले

परिवर्तन को लग्न भाव एवं लग्नेश की स्थिति से ही देखा जाता है। उसी प्रकार अष्टम भाव आयु की जानकारी तथा द्वादश भाव व्यय कारक है जिससे शरीर में होने वाली व्याधि के न्यून अधिक की जानकारी देखी जाती है।

छठवें भाव से रोग की जानकारी और रोग की अवधि के बारे में गोचर ग्रहों का परिभ्रमण तथा दशा, अन्तर्दशा एवं प्रत्यंतर्दशा को दृष्टिगत रखते हुए देख जाता है। इन भावों में ग्रहों की स्थिति त्वचा रोग की स्थिति के बारे में जानकारी देते हैं जोकि निम्नानुसार हैं—

सूर्य ग्रह- सूर्य ग्रह आरोग्य का कारक

है। यदि यह नीच राशि में हो पाप ग्रहों से युक्त हो, दृष्ट हो, पाप ग्रहों के नक्षत्र में हो, तो ऐसे व्यक्ति का आत्मविश्वास कमजोर होकर डिप्रेशन की भावना से ग्रसित होने लगता है तत्पश्चात् रोगों का आक्रमण होने लगता है।

मंगल ग्रह- मंगल ग्रह के कमजोर होने, नीच राशि में होने, पाप ग्रहों से दृष्टि में होने, पाप ग्रहों की युति के साथ होने अथवा पाप ग्रहों के नक्षत्र में होने के कारण यह शरीर में उन तत्त्वों को कमजोर करता है जो कि त्वचा के रंग को प्रभावित करता है, सांवालापन, खुरदरापन अथवा फोड़े-फुंसियां आदि करते



हुए संबंधित भाग। चेहरे पर धब्बे आदि उत्पन्न करता है। खुजली, दाद अथवा सर्दी-गर्मी में खुजलन करने की स्थिति बनाता है।

बुध ग्रह- बुध ग्रह हमारे शरीरकी त्वचा का कारक माना गया है। शरीर की ऊपरी त्वचा पर दाग, धब्बे आदि बुध के पापग्रहों के साथ होने, स्थित होने पर यह ग्रह बीमारी की बढ़ोत्तरी में सहायक होता है लेकिन लग्न कमजोर होगा, लग्नेश पीड़ित होने पर ही शरीर में त्वचा व्याधि होगी।

शुक्र ग्रह- यह ग्रह साजे-सजा, सुन्दता, व्यक्तित्व का निखारक माना जाता है। यह ग्रह जितना शुभ होता है उतना ही शरीर त्वचा में चमक एवं आकर्षणदायक होता है। शुक्र के कमजोर, पापग्रहों से मुक्त या दृष्ट होने पर त्वचा में सुन्दरता में कमी करता है, यदि लग्नेश भी कमजोर हो, बली नहीं हो तथा पापग्रहो से युक्त होने पर त्वचा की सुन्दरता में कमी करते हुए

त्वचारोग में सहायक होता है।

चन्द्र ग्रह- चन्द्र ग्रह मन का कारक है यदि यह पापग्रह से युत, दृष्ट अथवा कृष्णपक्ष का होने पर बली नहीं होकर मन की मलिनता दायक है, मन मलिन होने पर उत्साहहीनता होने पर भी शरीर की त्वचा प्रभावित होती है त्वचा में रूखापन होता है एवं लग्नेश यदि कमजोर होता है ऐसी स्थिति में त्वचा के रोग बढ़ाने में उत्प्रेरक का कार्य करता है। इस प्रकार उपरोक्त ग्रहों के अशुभत्व शरीर पर नुकसान नहीं करें इसके लिए हमें इन ग्रहों के अधिक नकारात्मक प्रभाव नहीं हो इसका ध्यान रखना चाहिए।

ग्रहों के अशुभत्व को कम कैसे करें- आहार का नियंत्रण रखना चाहिए। शुभग्रह के शुभफल की वृद्धि करने हेतु अपना संतुलित आहार लेना चाहिए।

शुक्र एवं चन्द्र की शुभता एवं धनात्मक ऊर्जा शरीर में प्रवेश करे इस हेतु

दूध, दूध की बनी वस्तुएँ पनीर, दही, घी आदि का सेवन शरीर की वांछित पर्याप्त आवश्यकता के अनुपात में लेना चाहिए। भगवान शिवजी के मंदिर पर नियमित दर्शन करना चाहिए।

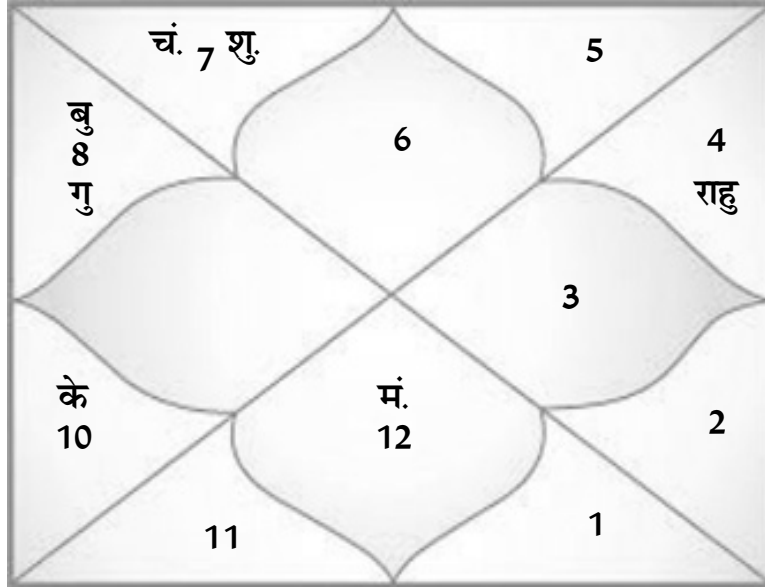
सूर्य के शुभ प्रभाव के लिए उषाकालीन समय से प्रातःकाल में सूर्य की रश्मियों को ग्रहण करने के लिए प्रातःकालीन घूमना, टहलना चाहिए तथा नियमित रूप से सूर्य को अर्घ्य देना चाहिए।

मंगल के अशुभत्व को कम करने के लिए तली हुई, गर्म प्रकृति के खाद्यान्न का सेवन कम करें, तांबे के पात्र में भरा हुआ जल का सेवन नियमित रूप से करना चाहिए। लाल फल जो तीक्ष्ण नहीं हो, मृदु हो उनका सेवन करना चाहिए तथा सिंदूर चढ़ने वाले देवता जैसे श्री गणेशजी, देवीजी, भैरवजी तथा आदि में से अपनी इच्छानुरूप हनुमानजी की नियमित आराधना करना चाहिए।

बुधग्रह के अशुभत्व को कम करने के लिए हरे खाद्यान्न, अंकुरित हरे मूंग का सेवन प्रातः कालीन नाश्ते में करना चाहिए। हरे फल, हरी, सब्जी का सेवन करना चाहिए। भगवान विष्णु, भगवान श्रीगणेशजी की नियमित आराधना करने से लाभप्रद सिद्ध होगा।

इस प्रकार त्वचा संबंधित रोगों के निवारण में ग्रहों का शुभत्व प्राप्त करने में उपरोक्त लिखित, सामान्य उपाय करने से प्राप्त होने वाली चिकित्सा में सहयोग के लिए उत्प्रेरक का कार्य करेंगे। उल्लेखनीय है कि यदि उक्त ग्रहों के अशुभत्व को दूर करने के लिए नियमित उपाय करते रहने से रोग का आरंभ ही ग्रहों के शुभत्व होने से नहीं होगा।

1.1.2019 रात्रि 12.00 लग्न- 5.9.26



डॉ. हेमचंद्र पाण्डेय

विद्याभूषण सिंह

जे.एस. परिहार

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
8	6	11	7	7	6	8	3	9
15	15	5	29	17	29	17	3	3
54	17	41	25	39	10	16	33	33
पूर्वाषाढा	स्वाति	अश्रद्ध	ज्येष्ठा	ज्येष्ठा	विशाखा	पूसाढा	पुण्य	उषाष्ठा

ईस्वी वर्ष 2019 आपके लिए कैसा रहेगा ?

यह सर्व विदित है कि इसी सन वर्ष का प्रारंभ 1 जनवरी को रात्रि में 12:00 बजे प्रारंभ होता है इस 2019 वर्ष के तत्समय की गणना की जाए तो वर्ष कन्या लग्न 9 अंश 25 कला का आरंभ होता है। कन्या लग्न की कुण्डली में ग्रह स्थिति

तुला राशि पर चंद्र शुक्र, वृश्चिक राशि में बुध तथा गुरु, धनु राशि में सूर्य शनि, मकर राशि में केतु, मीन राशि में मंगल तथा कर्क राशि में राहु स्थित है।

लग्नेश बुध ज्येष्ठा नक्षत्र में पराक्रम भावमें सुखेश सप्तमेश गुरु जोकि ज्येष्ठा नक्षत्र में ही है स्थित है इससे स्पष्ट है कि देश की आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। विदेशों में देश की आर्थिक साख बढ़ेगी। व्यापारी वर्ग को अनुकूल तथा उत्तम अवसर उपलब्ध होंगे। देश में पर्यटन का बढ़ावा मिलेगा। भारतीय संस्कृतिक

धरोहरों का शासन और समाज का सहयोग मिलकर पर्यटन के क्षेत्र में अनुकूलता रहेगी।

चंद्र शुक्र धन भाव में होनेसे कृषि और रस रसायन के उत्पादन में वांछित वृद्धि होगी।

द्वादश भावेश षष्ठेश शनि के साथ चतुर्थ भाव में होने से भ्रमण और यात्रा आदि के संसाधनों में सतर्कता आवश्यक होगी। अर्थात् वाहन दुर्घटनाएं, प्राकृतिक प्रकोप जैसे अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकम्प तथा आग्नि प्रकोप से सावधानी रखना चाहिए। यह प्रत्येक परिवार और समाज का दायित्व बनता है।

राशि वार यह वर्ष कैसा रहेगा, प्रत्येक राशि का विवरण निम्नानुसार है,,,

मेष राशि- मेष राशि वालों के लिए यह वर्ष उत्तम फल देने वाला रहेगा अपने कार्यों में प्रगति होगी। कुछ नई योजनाएं तज के बारे में सामने

आएगी जिन्हें सफल होना संभव साझेदारी से संबंधित कार्य में सावधानी रखना आवश्यक सर्विस क्लास वालों को अपने कार्यों में वांछित सफलता प्राप्त होगी। प्रगति होने की संभावना भी प्रतीत होती है। कृषक वर्ग को समय पर लाभ मिलेगा साथ ही विद्यार्थी वर्ग को अपने परिश्रम का उत्तम फल प्राप्त होगा।

वृषभ राशि- इस वर्ष आपको अपनी प्रतिष्ठा पर विशेष ध्यान देना होगा यदि किसी कार्य में संलग्न हैं तो उसे सही ढंग से पूरा करने का प्रयास करिए आप के विरोधी अधिक सक्रिय रहने के कारण मानसिक चिंता अथवा तनाव रहेगा। पारिवारिक जीवन अनुकूल रहेगा, संतान की वांछित प्रगति इस वर्ष होगी। अपने पुराने आर्थिक संकट भी दूर होंगे। व्यापारी वर्ग को समय अनुकूल है।



नौकरी करने वालों को कार्य में अधिक सावधानी रखनी होगी कृषक वर्ग को प्रयास अधिक करने होंगे विद्यार्थी वर्ग को समय अनुकूल है।

मिथुन राशि- आपकी राशि पर इस वर्ष में आर्थिक कठिनाईयां अधिक रहेगी। पारिवारिक कार्यों में अधिक खर्च की संभावना है, कुछ विरोधी वर्ग आपके कार्यों में अनावश्यक हस्तक्षेप कर सकते हैं। इस कारण सावधानी रखना आवश्यक है हालांकि वर्ष के उतार दो में प्रगति के नए द्वार खोल सकते हैं व्यापारी वर्ग को वर्ष का पुरवा कमजोर है नौकरी करने वालों को वर्ष अनुकूल रहेगा, कृषक वर्ग को अपने कार्य का लाभ प्रयास से मिल सकेगा। विद्यार्थी वर्ग को मेहनत की आवश्यकता है।

कर्क राशि- पिछले वर्ष की तुलना में या वर्ष बेहतर साबित होगा आपके कार्यों में आ रहे व्यवधान कब होंगे तथा स्वास्थ्य से संबंधित समस्याएं कम होंगी। विरोध समाप्त होगा, परिवार के लिये समय जूटा पाएंगे। सामाजिक कार्य दायित्व में वृद्धि होगी। यश प्राप्त होगा। व्यापारी वर्ग के लिए यह वर्ष उत्तम है। नौकरी करने वालों के लिए विश्वास तथा संतोष और अपने काम का उचित लाभ प्राप्त होगा। कृषक वर्ग को समय पर धन लाभ प्राप्त होगा। विद्यार्थी वर्ग को अधिक श्रम से सफलता प्राप्त होगी।

सिंह राशि- यह वर्ष आपके लिए मानसिक संतुष्टि तथा संतान से संबंधित चिंताओं की कमी करेगा। यदि संतान की आजीविका तय हो चुकी है, तो उनके विवाह अथवा स्थाईत्व आदि के लिए यह वर्ष निर्णय कराएगा, जिसमें व्यस्तता रहेगी। व्यापारी वर्ग को धन लाभ के लिए यह समय उपयुक्त है। किसान भाइयों के लिए यह वर्ष अपने कार्य के अनुसार लाभ देने वाला है नौकरी करने वालों के लिए या वर्ष प्रगति दायक है, विद्यार्थी वर्ग को सफलता दायक वर्ष है।

कन्या- इस वर्ष आपको अपने गाड़ी को संबंध में सावधानी रखनी होगी व्यर्थ के विवाद रह सकते हैं यदि नौकरी करने वाले हैं तो आप को समय पर कार्य पूर्ण नहीं होने के कारण मानसिक तनाव व्यस्त हो सकता है पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा। स्थाई सम्पत्ति मकान आदि के लिए खर्च होगा। व्यापारी वर्ग को समय पर धन लाभ होगा, तथा संतुष्टि रहेगी। कृषक वर्ग को अपनी परिश्रम के अनुरूप लाभ मिलेगा। विद्यार्थी वर्ग को अधिक मेहनत करना लाभ प्रद रहेगा।

तुला राशि- यह वर्ष आपके लिए प्रतिष्ठ वर्धक है, आपके किए कार्यों की सराहना होगी तथा कुछ कार्य दायित्व और बढ़ेंगे। राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी, पुराने रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। व्यापारी वर्ग को यह वर्ष लाभप्रद रहेगा। नौकरी और को अधिक प्रयास से सफलता मिल पाएगी। कृषक वर्ग अपने कार्य से संतुष्ट रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को अधिक मेहनत करने से लाभ प्राप्त हो सकेगा, समय का सदुपयोग करना चाहिए।

वृश्चिक राशि- आपके लिए या वरदान और समृद्धि दायक रहेगा पारिवारिक कार्य भाई तो में अधिक व्यस्तता रहेगी तथा अपने कार्यों से यथासंभव लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वालों को यह समय उपयुक्त है, अपने कार्यों की सराहना होगी तथा वरिष्ठ अधिकारियों का स्नेह रहेगा। व्यापारी वर्ग को अपने कार्यों में सफलता मिलेगी, किसान भाइयों को अपने प्रयास से सफलता मिल सकेगी। विद्यार्थी के लिए समय प्रतिकूल है, अधिक वह जगता से अध्ययन करना चाहिए।

धनु राशि- आपकी राशि के लिए यह वर्ष अधिक प्रयास करने पर यश और सफलता दायक रहेगा। कुछ स्थाई संपत्ति के बारे में प्रयास सफल होंगे, परिवर्तन के योग भी बनते हैं। यदि व्यापार कर बात करते हैं तो कुछ नए कार्य कर भेजी शुरुवात हो सकती है

नौकरी वर्ग को स्थानांतरण अथवा कार्य परिवर्तन प्रयोग बनते हैं कृषक वर्ग को अपने किए गए कार्यों में सफलता और धन लाभ विद्यार्थी वर्ग को अपने प्रयास से विद्याधन में सफलता मिलेगी।

मकर राशि- यह वर्ष आपके लिए राज की कार्यों में सफलता दायक है। कुछ जो पुराने रुके हुए कार्य होंगे वे पूर्ण होंगे। अपने कार्यों के लिए परिवार से दूर रहने के योग भी बन सकते हैं, यदि स्वास्थ्य का ध्यान रखेंगे तो अधिक उत्तम रहेगा। भ्रमण की अधिकता रहेगी, व्यापारी वर्ग को अधिक दौड़ धुप करनी होगी। नौकरी करने वालों को कार्य की अधिकता रहेगी। कृषक वर्ग को अपने कार्यों में अधिक व्यस्त रहना होगा। विद्यार्थी वालों के लिए वर्ग के लिए समय कमजोर है ध्यान दें।

कुम्भ राशि- आपकी राशि पर यह वर्ष लाभ प्रद रहेगा। कार्य की सराहना होगी। व्यस्तता रहेगी लेकिन मनकी प्रसन्नता रहेगी। अपने पुराने उष्ट मित्रों से कार्यों में सहयोग मिलेगा। व्यापारी वर्ग को लाभप्रद कार्यों के व्यापार की अचानक योजना बनेगी और सफलता मिलेगी। कृषक वर्ग के लिए वर्ष आर्थिक कष्टप्रद रहेगा। व्यर्थ भ्रमण और खर्च होगा। नौकरी वर्ग को अधिक कार्यों के कारण मानसिक तनाव रहेगा। विद्यार्थी के लिए वर्ष बेहतर रहेगा।

मीन राशि- राजकीय कार्यों के लिए वर्ष अनुकूल रहेगा। किसी विशिष्ट उपलब्धि से मन को संतुष्टि रहेगी। पद एवं सम्मान दोनों समय पर मिलेंगे। सामाजिक कार्य दायित्व बढ़ेगा। मित्रों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। व्यापारी वर्ग के लिए वर्ष शुभ है लाभ के अवसर मिलेंगे। कृषक वर्ग का समय अनुकूल रहेगा। समय पर लागत मूल्य का उचित लाभ मिलेगा। नौकरी वर्ग के लिए भी वर्ष उत्तम रहेगा। प्रगति के अवसर मिलेंगे। विद्यार्थी वर्ग को समय का सदुपयोग करना उत्तम रहेगा।

ग्रहों के राशि परिवर्तन योग

ग्रहों के राशि परिवर्तन योग जो कि अन्योन्याश्रित योग भी कहलाता है। कुल 66 योग होते हैं जिनमें दो ग्रहों का परस्पर राशि परिवर्तन करने से स्पष्ट है कि दोनों ग्रह एक दूसरे की राशि में उपस्थित होकर अपना प्रभाव जातक को दे रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि केन्द्र एवं त्रिकोणीय के ग्रहों का परस्पर राशि परिवर्तन महायोग का निर्माण करते हैं जिसमें ये महायोग 28 प्रकार के हैं। इसके अतिरिक्त 30 योग जो कि षष्ठम, अष्टम एवं द्वादश भाव के राशि स्वामी के साथ केन्द्र एवं त्रिकोण भाव के स्वामी के साथ होते हैं। ऐसे योग वाले जातक संबंधित राशि परिवर्तन के ग्रह की दशा/अन्तर्दशा/प्रत्यंतर्दशा में अपनी बुद्धि विपर्याय के कारण गलत निर्णय लेते हैं तथा विषम परिस्थिति का निर्माण करते हैं ये दैन्य योग में आता है। इसके अतिरिक्त 8 खल होते हैं जो कि तृतीय एवं एकादश भाव के साथ स्वामी के साथ में 3 त्रिकोणीय के साथ बनते हैं।

भावेश परिवर्तन के कुल 66 योग हैं। जिनमें से 28 योग शुभ माने गये हैं ये योग महायोग के होते हैं।

निम्नानुसार हैं-

1. लग्नेश द्वितीय में द्वितीयेश लग्न में।
2. लग्नेश चतुर्थ में चतुर्थेश लग्न में।
3. लग्नेश पंचम में पंचमेश लग्न में।
4. लग्नेश सप्तम में सप्तमेश लग्न में।
5. लग्नेश नवम में नवमेश लग्न में।
6. लग्नेश दशम में दशमेश लग्न में।
7. लग्नेश लाभ में लाभेश लग्न में।
8. धनेश चतुर्थ में चतुर्थेश धन भाव में।
9. धनेश पंचम में पंचमेश धन भाव में।
10. धनेश सप्तम में सप्तमेश धन भाव में।
11. धनेश भाग्य भाव में भाग्येश धन भाव में।
12. धनेश कर्म भाव में दशमेश धन भाव में।
13. धनेश लाभ भाव में लाभेश धन भाव में।
14. सुखेश पंचम भाव में पंचमेश सुख भाव में।
15. सुखेश नवम भाव में नवमेश सुख भाव में।
16. सुखेश नवम भाव में नवमेश सुख भाव में।
17. सुखेश दशम भाव में दशमेश सुख भाव में।
18. सुखेश लाभ भाव में लाभेश सुख भाव में।
19. पंचमेश सप्तम भाव में सप्तमेश पंचम भाव में।
20. पंचमेश नवम भाव में नवमेश पंचम भाव में।





21. पंचमेश दशम भाव में दशमेश पंचम भाव में।
22. पंचमेश लाभ भाव में लाभेश पंचम भाव में।
23. सप्तमेश सप्तमेश भाग्य भाव में भाग्येश सप्तम भाव में।
24. सप्तमेश दशम भाग्य भाव में दशमेश सप्तम भाव में।
25. सप्तमेश लाभ भाव में लाभेश सप्तम भाव में।
26. भाग्येश राज्य भाव में राज्येश भाग्य भाव में।
27. भाग्येश लाभ भाव में लाभेश भाग्य भाव में।
28. राज्येश लाभ भाव में लाभेश राज्य भाव में।

महायोग में उत्पन्न व्यक्ति लक्ष्मी का कृतावन्त होता है। धनवान व्यक्ति होता है। ऐसा व्यक्ति, सुंदर, गुणवान, राज्य से सम्मानित, उच्च पर आसीन अथवा उस व्यक्ति को राज्य अधिकार प्राप्त होते हैं। राजकीय पद अथवा अपने जीवन में राजसुख प्राप्त करता है। ऐसे व्यक्ति धनवान, पुत्रवान और भवन तथा वाहन सुख से सुखी होता है। इस प्रकार 28 योग अन्योन्याश्रित राजयोग अर्थात् धनी योग वाला होता है।

38 योग ऐसे होते हैं जिन्हें दैन्य योग कहा जाता है। ऐसा नहीं कि ऐसे योग वाला व्यक्ति गरीब होकर जीवन जीने वाला नहीं होता है। समृद्धिवान होता है लेकिन थोड़ी सी त्रुटी अथवा विपरीत बुद्धि के कारण बड़े नुकसान का भागी होती है। अच्छा नहीं माना जाता है। उन्हें कष्ट होता है लेकिन अपने बुद्धि विपर्यय के कारण 8 योग, खल योग और शेष 30 योग दैन्य योग होते हैं।

8 खल योग

1. लग्नेश तृतीय में तृतीयेस लग्न में।
2. धनेश तृतीय में तृतीयेस धन भाव में।
3. तृतीयेस चतुर्थ में, चतुर्थेश तृतीय में।
4. तृतीयेस पंचम में पंचमेश तृतीय में।
5. तृतीयेस सप्तम में सप्तमेश तृतीय में।
6. तृतीयेस भाग्य में भाग्येश तृतीय में।
7. तृतीयेस राज्य में राज्येश तृतीय में।
8. तृतीयेस लाभ में लाभेश तृतीय में।

खल योग अर्थात् दुष्टप्रभाव योग वाले होते हैं। जो व्यक्ति खल योग में जन्म लेता है। वह कभी दुराचार/अनाचार मार्ग में तो कभी सदाचार मार्ग वाला होता है। कभी दरिद्रता और दुख तो कभी सुख और अच्छी वाणी से बर्ताव करने वाला होता है।

ऐसे व्यक्ति को शुभ प्रभाव कम और शुभ प्रभाव अधिक होते हैं। अतः खल योग की संज्ञा दी गई है।

दैन्य योग

1. व्ययेस लग्न में लग्नेस व्यय में।
2. व्ययेस द्वितीय में द्वितीयेस व्यय में।
3. व्ययेस तृतीय में चतुर्थेश व्यय में।
4. व्ययेस चतुर्थ में चतुर्थेश व्यय में।
5. व्ययेस पंचम में पंचमेश व्यय में।
6. व्ययेस षष्ठम में षष्ठेश व्यय में।
7. व्ययेस सप्तम में सप्तमेश व्यय में।
8. व्ययेस अष्टम में अष्टमेश व्यय में।
9. व्ययेस नवम में नवमेश व्यय में।
10. व्ययेस राज्य में राज्येश व्यय में।
11. व्ययेस लाभ में लाभेश व्यय में।
12. लग्नेस अष्टम में अष्टमेश लग्न में।
13. अष्टमेश द्वितीय में द्वितीयेस अष्टम में।
14. अष्टमेश तृतीय में तृतीयेस अष्टम में।
15. अष्टमेश चतुर्थ में चतुर्थेश अष्टम में।
16. अष्टमेश पंचम में पंचमेश अष्टम में।
17. अष्टमेश षष्ठम में षष्ठेश अष्टम में।
18. अष्टमेश सप्तम में सप्तमेश अष्टम में।
19. अष्टमेश नवम में नवमेश अष्टम में।
20. अष्टमेश दशम में दशमेश अष्टम में।
21. अष्टमेश एकादश में एकादशमेश अष्टम में।
22. षष्ठेश लग्न में और लग्नेस अष्टम में।
23. षष्ठेश धन में और धनेस षष्ठम भाव में।
24. षष्ठेश तृतीय में और तृतीयेस षष्ठम भाव में।
25. षष्ठेश सुख में और सुखेश षष्ठम भाव में।
26. षष्ठेश पंचम में और पंचमेश षष्ठम भाव में।
27. षष्ठेश सप्तम में और सप्तमेश षष्ठम भाव में।
28. षष्ठेश भाग्य में और भाग्येश षष्ठम भाव में।
29. षष्ठेश राज्य में और राज्येश षष्ठम भाव में।
30. षष्ठेश लाभ में और लाभेश षष्ठम भाव में।

इस प्रकार दैन्य योग वाले जातकों को बनने वाले योग के ग्रहों की दशा, अंतर्दशा में गलत अथवा त्रुटिपूर्ण निर्णय अपने कार्यों में नहीं लेना चाहिए, ताकि होने वाले नुकसान से बच सकें।



त्रैमासिक राशि भविष्य फल जनवरी से मार्च 2019

पं. हेमचंद्र पाण्डेय

पं. विनोद जोशी

पं. अरविन्द पाण्डेय

मेष चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ	वृषभ ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो	मिथुन का, की, कू, घ, ड, छ, के, को, हा
<p>जनवरी 2019</p> <p>यह मास आपके लिए उत्तम तथा प्रगति दायक रहेगा। किसी ऐसे विशिष्ट व्यक्ति से संपर्क को होगा जो कि आपके लिए लाभ तथा लाभ प्रद रहेगा किसी पारिवारिक कार्य में अधिक व्यस्तता रहेगी पुराने रुके हुए द्रव्य प्राप्ति के योग बनते हैं। व्यापारी वर्ग के लिए समय उत्तम तथा कृषक वर्ग के लिए अपनी लागत से अच्छी प्राप्ति के योग बनते विद्यार्थी वर्ग को अधिक सावधानी से अध्ययन करना चाहिए समय व्यर्थ में व्यतीत ना हो इसका ध्यान रखें मास की 2,3,7, 10, 11, 15,21, 28 एवं 30 उत्तम रहेगी।</p>	<p>जनवरी 2019</p> <p>यहमाह आप को आकस्मिक धन लाभ दायक है रुका हुआ द्रव्य प्राप्त होगा। परिवार में किसी मांगलिक आज की योजना बनेगी वरिष्ठ अधिकारियों की कृपा रहेगी जिसे नियमानुसार आपको कार्य का लाभ मिलेगा व्यापारी वर्ग को उत्तम समय कृषक वर्ग को समय पर लाभ नौकरी करने वालों को समय अनुकूल रहेगा। विद्यार्थी वर्ग का समय लाभप्रद। राज की कार्यों में सफलता मिलेगी इस माह के दिनांक 4,6,8,9,12,15,18,24एवं28 शुभ फल दायक रहेगी।</p>	<p>जनवरी 2019</p> <p>यह मास आपकी राशि वालों को पारिवारिक सुख की वृद्धि करेगा। परिवार में खुशहाली ग वातावरण रहेगा पुराना रुका हुआ द्रव्य प्राप्त होगा। व्यापारी वर्ग के लिए यह माह उत्तम है। नौकरी वर्ग को अधिक य करना होगा। कृषक वर्ग अपने कार्य से संतुष्ट होकर धन का लाभ प्राप्त करेंगे। विद्यार्थी अपने कार्य में व्यस्तता से लाभ प्राप्ति हागी। मास की तारीख 2,3,7,9,11,15,19,23, एवं 27 शुभ फल दायक रहेगा।</p>
<p>फरवरी 2019</p> <p>यह माह आर्थिक दृष्टि से थोड़ा कष्ट पद रहेगा। पारिवारिक कार्यों में विशेष व्यय कारक समय रहेगा। नौकरी करने वालों को अपने कार्य में विशेष सावधानी रखना जरूरी होगा व्यापारी और को अनावश्यक वैसे बचना चाहिए। नौकरी करने वालों को कोई जोखिम भरा काम नहीं करना चाहिए। कृषक वर्ग का समय अनुकूल है विद्यार्थी वर्ग को अपने कार्य में वांछित सफलता मिलेगी। मास की 2, 3, 5, 7, 9, 11, 17, 19, 21, 27 एवं 29 तारीख शुभ फल दायक है।</p>	<p>फरवरी 2019</p> <p>इस माह आपको व्यावसायिक कार्यदायित्व में कम ध्यान दे पाओगे क्योंकि सामाजिक कार्य दायित्व अधिक रहेगा। अपने कार्य दायित्व में सफलता भी प्राप्त होगी। व्यापारी वर्ग को विशेष ध्यान रखना आवश्यक होगा, लेकिन सामाजिक यश मिलेगा। रोचक वर्ग को समय पर लाभ मिलेगा नौकरी करने वालों को अपने कार्य दायित्व की प्रशंसा होने से मन पसंद करेगा विद्यार्थी वर्ग को समय शुभ है। मासकी 1, 5, 8, 11, 19, 23, 29 तारीखें शुभ फलदायक रहेगी।</p>	<p>फरवरी 2019</p> <p>मास में संतोष की भावना रहेगी, अपने कार्यों में सफलता इसका मुख्य कारण रहेगा। मन में अधिक प्रगति की भावना रहेगी। मास अनुकूल है। व्यापारी वर्ग को अपना उत्तम लाभ प्राप्त होगा। सरकारी काम काज में सफलता और यश मिलेगा। कृषक वर्ग को अपने सीमित संसाधनों के बावजूद उत्तम लाभ मिलेगा। नौकरी वर्ग को मानसिक तनाव रहेगा। विद्यार्थियों को उत्तम सहयोग। मास की 1, 3, 7, 9, 11, 16, 19, 24 एवं 26 शुभ फल दायक है।</p>
<p>मार्च 2019</p> <p>यह मास जमीन जायदाद अथवा किसी कानूनी मसले के लिए अच्छा नहीं नौकरी करने वाला व्यक्ति इस माह तनाव में रहेगा। राजनैतिक अथवा किसी विशेष व्यक्ति से संयोग द्वारा आपका यह मास अनुकूल रह सकता है विशेषकर व्यापारी वर्ग को सावधानी आवश्यक कृषक वर्ग को अपने समय पर उत्तम ला प्राप्त होना संभव है। नौकरी वर्ग को विशेषकर सावधानी से सारी करना चाहिए। विद्यार्थी वर्ग को अनुकूल का प्राप्त होगी। मास की 4, 6, 7, 10, 11, 17, 19, 21, 24 एवं 30 तारीख शुभ रहेगा।</p>	<p>मार्च 2019</p> <p>इस मास में आपका आत्मविश्वास उत्तम रहेगा जिसके कारण आप अपने सभी कार्यों में सफलता हासिल करेंगे यदि आपके द्वारा अपने कार्यों को योजनाबद्ध करने का प्रयास किया है तो आप उसे तन्मय ता से पूरा कर लीजिए। व्यापारी वर्ग को अपने कार्यों में कोई भूल न रहे इसका ध्यान रखें। किसान वर्ग को कार्य का उत्तम मूल्य प्राप्त होगा। नौकरी करने वालों को सजगता से कार्य करना होगा। विद्यार्थी वर्ग को अनावश्यक समय व्यतीत नहीं करना चाहिए। मासकी 4, 9, 11, 21, 27 शुभ है।</p>	<p>मार्च 2019</p> <p>आपकी अगम बुद्धि से विचार करके किए गए कार्य सफलता दायक सिद्ध होंगे। यदि आपके द्वारा किसी विशेष कार्य में गए किया गया है तो वह आपको लाभित करेगा। विशेषकर व्यापारी वर्ग के लिए यह मास शुभ और लाभप्रद है। नौकरी वालों को अधिक य करने पर ही सफलता प्राप्त हो सकेगी। कृषक वर्ग के लिए अधिक य से किए गए व्यय का समान लाभ ही मिल सकेगा। मास की 3, 6, 10, 14, 15, 19, 23, एवं 30 तारीखें शुभ फल प्रद रहेंगी।</p>



त्रैमासिक राशि भविष्य फल

जनवरी से मार्च 2019

पं. हेमचंद्र पाण्डेय

पं. विनोद जोशी

पं. अरविन्द पाण्डेय

कर्क ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो	सिंह मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, रे	कन्या टे, तो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो
<p>जनवरी 2019</p> <p>यह मास आपके लिए कुछ नए कार्य करने की शुरुआत करा सकता है जिसमें कार्य करने की पद्धति में परिवर्तन आ सकता है। हालांकि आर्थिक कठिनाइयां अवश्य रहेगी, लेकिन कार्य करने में बाधाएं नहीं आएंगी। व्यापारी वर्ग के लिए यह समय अनुकूल है। कृषक वर्ग को अपने कार्य में सावधानी रखना आवश्यक है। नौकरी करने वालों को समय अनुकूल रहेगा। विशेषकर विद्यार्थी वर्ग को इस समय सावधानी से अध्ययन करना होगा। तारीख 1,5,7,9,11,17,23,और 29 शुभ है।</p>	<p>जनवरी 2019</p> <p>इस माह आपका भाग्यआपको सहयोगी रहेगा। समस्त कार्य सफलता की ओर अग्रसर होंगे, विशेषकर आपको अपने कार्यों में नई प्रेरणा मिलेगी। अपने कार्य में आत्मविश्वास और एकाग्रता बढ़ेगी विशेषकर व्यापारी वर्ग को समय अनुकूल रक्षक वर्ग को इस समय सावधानी से कार्य करना होगा। नौकरी वर्ग को सफलता और संतोष तथा विद्यार्थी वर्ग को समय पर संहयोग मिलने की स्थिति रहेगी। मास की 2,4,6,11,14,18,22,एवं 24 शुभ है।</p>	<p>जनवरी 2019</p> <p>यह मास आपको खर्च की अधिकता तथा आई की कमी वाला रहेगा। आयकी वृद्धि के लिए आपको प्रयास करने होंगे। अन्यथा इस मास में आपको मित व्ययिता से चलना पड़ेगा। व्यापारी वर्ग के लिए यह समय शुभ है। रक्षक वर्ग को समय पर लाभ मिलेगा नौकरी करने वालों के लिए समय सामान्य विद्यार्थी वर्ग को अपनी अधिक य से प्रयास करना चाहिए। मास के 11,21,24,26,28 एवं 31 शुभ है।</p>
<p>फरवरी 2019</p> <p>यह माहआपके लिए अनुकूल प्रतीत होता है। नए कुछ कार्यक्रम अच्छा फल देगा चाहेंगे साथी आप आपका मन कार्यों में सफलता के कारण प्रसन्नता से युक्त रहेगा विशेषकर नए लोगों से जुड़ने के कारण कार्य में गति आएगी, व्यापारी वर्ग को नए कार्यों से लाभ, कृषक वर्ग को अपने कार्य से संतुष्टि रहेगी। नौकरी वर्ग वालों को अधिक सत्ता से कार्य करने की आदत डाल ना चाहिए। विशेषकर विद्यार्थी वर्ग को सजग आवश्यक है। मास की 2, 4, 7, 9, 13, 15, 23 शुभ है।</p>	<p>फरवरी 2019</p> <p>यह माह आपके लिए प्रतिष्ठा वर्धक है आप के अधिकारी वर्ग अथवा वरिष्ठ लोगों का ऑफर विश्वास बढ़ेगा इस कारण आपको चाहिए कि आप अपने स्तर पर अधिक मेहनत कर कार्य में सफलता प्राप्त करें आपको कोई महत्वपूर्ण जिम्मेदारी का दायित्व भी मिल सकता है व्यापारी वर्ग को अधिक सजगता से कार्य करना चाहिए। कृषक वर्ग को समय पर कार्य होंगे। विद्यार्थी वर्ग को अपने कार्य से संतुष्टि मिलेगी। मास की 7, 13, 16, 19, 21, एवं 24 तारीख शुभ रहेगी।</p>	<p>फरवरी 2019</p> <p>इस माह में आपको कार्य में सफलता के लिए अपने आत्मविश्वास को प्रबल करना होगा। पहले से तय शुद्ध कार्यों को यथावत निर्वर्तित करने का उत्तम समय है। पी के स्वास्थ्यका ध्यान रखें। संतान की ओर से सुख, संतोष। व्यापारी वर्ग को अपने कार्य सीमित समय में करना चाहिए। कृषक वर्ग को समय पर लाभ मिलेगा। नौकरी करने वालों को समय पर कार्य निष्पादन नहीं होने से तनाव होगा विद्यार्थी वर्ग का उत्तम समय। मास की 12, 14, 18, 24, 28 शुभ है।</p>
<p>मार्च 2019</p> <p>यह माह आपके लिए लाभ प्रद रहेगा किसी अनजान व्यक्ति से कार्यों में सावधानी रखें। पारिवारिक आयु में व्यस्त रहेंगे संतान की ओर से चिंता कम होगी राज की कार्यों को अधुरा ना छोड़ें अन्यथा रुकावटें आएंगी व्यापारी वर्ग को समय प्रतिकूल है। कृषक वर्ग को कार्यों में सफलता। नौकरी वर्ग वालों को अधिक सजगता से कार्य करना चाहिए विद्यार्थी वर्ग को समस्याएं अधिक रहेंगी। मास के 9, 11, 13, 16, 19, 24, एवं 30 शुभ है।</p>	<p>मार्च 2019</p> <p>यह मांस आपको प्रतिष्ठावृद्धि करने वाला है। अपने कार्यों में एक विशिष्ट विश्वास के साथ सफलता हासिल करने में समर्थ होंगे, इस कारण समाज में आपको प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। नए विशिष्ट मित्रों का सहयोग मिलेगा। व्यापारी वर्ग के लिए समय कठिनाई भरा है लेकिन सफलता मिलेगी। कृषक वर्ग को उत्तम नौकरी वर्ग को कार्य में यश। विद्यार्थी वर्ग को अपना समय का सदुपयोग करना चाहिए। मास की 8, 10, 13, 18, 23, 27, एवं 31 शुभ है।</p>	<p>मार्च 2019</p> <p>इस मास में आपके विरोधि अधिक रहेंगे, प्रत्येक कार्यों में सावधानी और सजगता रखना होगी। प्रयास रहे कि कोई त्रुटि नही अपने कार्यों में नही रहे। राजकीय कार्यों में व्यवधान रह सकता है। व्यापारी वर्ग के लिए अधिक व्यय कारक समय रहेगा। कृषक वर्ग को अपने कार्यों में अधिक भ्रमण होगा इसके बाद लाभ मिल सकेगा। नौकरी करने वालों को अपने कार्य में अधिक सजगता रखनी होगी। विद्यार्थियों को अनावश्यक समय नष्ट करने के बजाय विद्याप्राप्ती में समय देना होगा।</p>



त्रैमासिक राशि भविष्य फल जनवरी से मार्च 2019

<p>तुला रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते</p>	<p>वृश्चिक तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू</p>	<p>धनु ये, यौ, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भ</p>
<p>जनवरी 2019</p> <p>आपको इस माह में कार्य में पदोन्नति की संभावना है। साझेदारी अथवा पार्टनरशिप में चल रहे कार्यों में सावधानी रखना आवश्यक है। स्वास्थ्य में उदर विकार अथवा पैरों के दर्द रह सकते हैं। मांस के अंत में मानसिक तनाव रह सकता है। व्यापारी घर को समय पर लाभ कृषक वर्ग को कठिनाइयां रह सकती नौकरी करने वालों को अधिक सजकता से कार्य करना चाहिए विद्यार्थी वर्ग के लिए उत्तम समय। मास की 2, 5, 9, 14, 16, 19, 23, 30 शुभ है।</p>	<p>जनवरी 2019</p> <p>यह मास आपके लिए आत्म बल तथा अनावश्यक शंकों को दूर करेगा और कार्य करने की तरफ प्रेरित करेगा। हो सकता है कि आप किसी नवीन कार्य की तरफ अग्रसर हों, लाभदायक रहेगा। व्यापारी वर्ग को जोखिम लेने में भी लाभ प्रतीत होगा। कृषक वर्ग को अपने नए कार्य में सफलता मिलेगी, नौकरी वर्ग वालों को सावधानी से सफलता किंतु सम्मान वृद्धि होगी। विद्यार्थियों के लिए समय शुभ है। मास की 2, 7, 10, 14, 19, 22, 28 शुभ है।</p>	<p>जनवरी 2019</p> <p>इस माह में आपको अपने कार्य को योजनाबद्ध तरीके से करना चाहिए जिससे कि कार्य में रुकावट ना आए, तथा सफलतापूर्वक पूर्ण हो सके। आपकी बहुत तरक्की करने की अभिलाषा से उसे पूर्ण करने में योजनाबद्ध तरीका अपनाना चाहिए व्यापारी वर्ग के लिए समय अनुकूल। कृषक वर्ग के लिए तनावपूर्ण समय। नौकरी करने वालों को अपने समय सीमा में कार्य करना ठीक रहेगा। मास की 2, 3, 7, 9, 15, 19, 24 शुभ है।</p>
<p>फरवरी 2019</p> <p>आपके लिए यह माह चुनौतीपूर्ण है। विरोधियों के षडयंत्र से बचकर कार्य करना होगा। यदि सरकारी नौकरी वह तो अधिक सजगता रखना आवश्यक है, अन्यथा तनाव की वृद्धि होगी। सोच समझ कर लिया गया निर्णय सफलता दे सकेगा व्यापारी वर्ग के लिए मांस अनुकूल है कृषक वर्ग के लिए समय पर कार्य होंगे। नौकरी करने वाले तथा विद्यार्थी वर्ग को अपने समय का सदुपयोग करने में ही लाभ है। मास की 3, 4, 10, 15, 17, 18, 24, शुभ है।</p>	<p>फरवरी 2019</p> <p>व्यापार करने में तथा अपने स्वतंत्र कार्यों में यह मास उत्तम रहेगा। आपके अपने परिचय क्षेत्र से भी लाभ मिलने की संभावना बनेगी। आर्थिक दृष्टि से यह मास अनुकूल रहेगा संतान की तरफ से संतोष रहेगा। व्यापारी वर्ग को मैं आया मिलेंगे कृषक वर्ग को सफलता और यश मिले सर्विस वालों को विशेषकर अधिक कि अपनों से सफलता मिलेगी। विद्यार्थी वर्ग को अपने समय का सदुपयोग नहीं करने से चिंता रहेगी। मास की 11, 13, 16, 19, 20, 23, 24 अनुकूल रहेगी।</p>	<p>फरवरी 2019</p> <p>यह महिना आप को कार्य करने में अस्थिरता देने वाला है कई प्रकार की योजनाएं सामने आएंगी परंतु बुद्धिमत्ता पूर्ण निर्णय करना सफलता दायक रहेगा। इस माह के अंतिम सप्ताह में आपको अनिश्चितता दूर हो सकेगी। आर्थिक लाभ होगा। व्यापारी वर्ग को लाभ प्रद। नौकरी वालों को अधिक परेशानी। कृषक वर्ग को समय पर धन लाभ विद्यार्थी वर्ग को समय का सदुपयोग करना चाहिए। मास की तारीख 4, 14, 15, 19, 24, 26 शुभ फल दायक है।</p>
<p>मार्च 2019</p> <p>यह माह आपके लिए स्वयं के परीक्षण और अपने आत्म निरीक्षण का है जिसमें आप अपने कार्यों में सफलता का प्रतिष्ठत का स्वयं ही आकलन कर पाएंगे अपनी स्व प्रेरणा से कुछ छुटे हुए काम में सफलता हासिल कर सकेगे। व्यापारी वर्ग के लिए यह सर्वे कमजोर है कृषक वर्ग अपने किए गए कार्य में सफलता की प्राप्त करेगा नौकरी वर्ग वालों को अधिक श्रम की आवश्यकता है। विद्यार्थी वर्ग को चाहिए कि अधिक य करें। मास की 4, 7, 13, 15, 21, 26, 29 शुभ है।</p>	<p>मार्च 2019</p> <p>यह मास आपके कर्म पक्ष के लिए लाभप्रद है। यदि आप अल्पकालीन कार्य करने वाले हैं तो आपको कर्मपक्ष में निरंतरता प्राप्त होगी। यह माह आपको जोखिम भरे कार्य करने के लिए उत्तम है। व्यापारी वर्ग लाभप्रद समय रहेगा। कृषक वर्ग को अधिक श्रम से सफलता हासिल होगी, नौकरी करने वालों को अधिक य से कार्य में सफलता प्राप्त हो सकेगी। मास की 3, 7, 11, 14, 17, 19, 23, 27 एवं 31 शुभफल दायक है।</p>	<p>मार्च 2019</p> <p>यह माह आपके लिए किसी नवीन योजना को क्रियान्वित करने का उत्तम अवसर उपलब्ध कराएगा। आपके निर्णय पर यह निर्भर करेगा कि आप उसका समय पर लाभ उठा सकते हैं या नहीं। व्यापारी वर्ग को समय का लाभ मिल सकेगा। कृषक वर्ग अपनी व्यस्तता अथवा आलस्य नहीं होतो लाभ प्रद रहेगा। नौकरी वर्ग को असंतोष और अनावश्यक तनाव रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को समय की प्रतिकूलता के कारण लाभ में कमी। मास की 6, 9, 11, 14, 16, 24, 30 अनुकूल और शुभ रहेगा।</p>



त्रैमासिक राशि भविष्य फल जनवरी से मार्च 2019

मकर भो, जा, जी, खी, खू, खे, खोग, गा,गी	कुंभ गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा	मीन दी, दु, थ, क्ष, ज, दे, दो, चा, ची
<p>जनवरी 2019</p> <p>पारिवारिकदायित्व इस अधिक रहेंगे परंतु उनका बखूबी आप निर्वहन कर सकेंगे। आर्थिक लाभ भी समय पर होगा। अपने कार्यों में पारिवारिक सहयोग भी मिलेगा। पार्टनरशीप के कार्य में ध्यान रखना चाहिए। व्यापारी वर्ग को समय पर धन लाभ कृषक वर्ग को अपने कार्योंको अधिक मेहनत से कर ने होंगे नौकरी करने वाले व्यक्ति को समय पर सराहना मिलेगी। विद्यार्थीवर्ग को अपने अध्ययन में अधिक ध्यान देना होगा।मास की 15,17,21,23,29,31 तारीख शुभ है।</p>	<p>जनवरी 2019</p> <p>यह मास आपको रचनात्मक कार्य क्रमों में अधिक व्यस्त रखेगा। मित्रों से संबंध में प्रगाढ़ता बढ़ेगी। अधिकारी वर्ग की प्रसन्नता रहेगी। सामाजिक यस अच्छा मिलेगा। पारिवारिक चिंता भी इस माह अधिक रहेगी। व्यापारी वर्ग को अपने कार्यों में सामान्य व्यवधान रहेगा। कृषक वर्ग को समय पर लाभ मिलेगा। नौकरी करने वालों को यह मास सामान्य रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को अपने कार्य दायित्व पर अधिक ध्यान देना होगा।मास की 5,7,10,16,19,22,29 शुभ है।</p>	<p>जनवरी 2019</p> <p>यह मास आपके लिए अनुकूल प्रतीत होता है सुख वैभव की संसाधन उपलब्ध होगा। स्थाईत्व प्राप्त होकर मानसिक संतुष्टि प्राप्त होगी। स्वयं को अधिक दौड़ धूप के कारण स्वास्थ्य पर ध्यान रखना चाहिए उदर विकार रह सकता है। व्यापारी बंधुओं को समय पर धन लाभ। कृषक वर्ग को अधिक प्रयास से कार्य में लाभ होगा। नौकरी करने वालों को यह मास उत्तम फलदायक रखेगा रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को अपने श्रम का सही मूल्य मिलेगा। मास की 9,11,17,22,24,29 शुभ है।</p>
<p>फरवरी 2019</p> <p>इस माह आपको प्रवृत्ति में परिवर्तन करना होगा। यदि आलस्य की प्रवृत्ति से दूर रहे तो आपको सफलता अवश्य मिलेगी अपने कार्यों में व्यवधान पहुंचाने वाले अज्ञात विरोधी अधिक रहेंगे व्यापारी वर्ग को अपने स्वयं का पूरा लाभ मिलेगा। कृषक वर्ग को समय पर अपने सभी लाभ मिलेंगे। नौकरी वर्ग वालों को अधिक प्रयास से सफलता मिलेगी। विद्यार्थी वर्ग को अपने सीमित साधनों से अच्छा लाभ मिलेगा। मास की 5, 10, 13, 16, 17, 26 शुभ है।</p>	<p>फरवरी 2019</p> <p>यह मास पारिवारिक चिंताओं के अधिक रहेगा, विशेषकर पत्नी के स्वास्थ्य के बारे में चिंता रहेगी। संतान के बारे में भी चिंता रहेगी जो कि शैक्षिक अथवा भाग्योदय से संबंधित होगी। व्यापारी वर्ग को समयपर सही निर्णय लेने से लाभ होगा। कृषक वर्ग को शीघ्र निर्णय लेने में नुकसान संभव है। नौकरी करने वालों को तन्मयता से कार्य से सराहना मिलेगी। विद्यार्थी वर्ग का समय तनावपूर्ण रहेगा। मास की 1, 5, 10, 16, 19, 24, 26 शुभ रहेगी।</p>	<p>फरवरी 2019</p> <p>इस मास में भी आपकी की कार्यों की सराहना होगी अपने निकटतम शत्रु पराजित होगी साथ ही कार्यों में विस्तार होगा कुछ पुराने रुके हुए कारी भी सफलता की ओर अग्रसर होंगे। व्यापारी वर्ग को अपने कार्यों से संतुष्टि मिलेगी। कृषक वर्ग को अपने कार्यों में अधिक व्यस्त रहने के योग हैं नौकरी करने वालों को इस समय अपने स्वयं के रुके हुए काली काली कार्यों को कर लेना चाहिए। विद्यार्थी वर्ग को समय अनुकूल प्रतीत होता है। मास की तारीख 4,8,10,12,16,19,23 शुभ है।</p>
<p>मार्च 2019</p> <p>यह मास आपको अधिक दौड़ धूप का रहेगा। जिसके पश्चात भी सफलता का प्रतिशत कम रहेगा। अपने किए गए कार्यों को विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है, ताकि समय पर धन लाभ प्राप्त हो सके। व्यापारी वर्ग को अधिक प्रयास की आवश्यकता है। कृषक वर्ग को समय परवांछित लाभ। नौकरी करने वालों को अधिक प्रय से कार्य में सफलता मिल सकेगी। विद्यार्थी वर्ग को अपने प्रयास और बढ़ाने चाहिए। मास की 1, 6, 10, 13, 18, 22, 27 शुभ तारीखें हैं।</p>	<p>मार्च 2019</p> <p>इस मास में आपको सावधानीपूर्वक कार्य करने से शांति महसूस हो सकेगी। कार्य में त्रुटि होने के कारण आर्थिक क्षति की संभावना प्रतीत होती है। विशेषकर नौकरी करने वालों को सावधानी रखना चाहिए। व्यापारी वर्ग को सावधानी से कार्य करने में सफलता रह सकती है। कृषक वर्ग को अपने श्रम के अनुरूप सफलता एवं लाभ मिलेगा। विद्यार्थी वर्ग को अपनी सफलता के लिए अधिक श्रम करना होगा। मास की 3, 12, 21, 24, 27, 29 शुभ रहेगा।</p>	<p>मार्च 2019</p> <p>यह माह अधिक व्यस्त होने के बावजूद भी आर्थिक लाभदायक नहीं है। अपने कार्यों में कोई न कोई त्रुटि उजागर हो सकती है, इस कारण से अधिक सावधानी से कार्य करना चाहिए, विशेषकर व्यापारी वर्ग को ध्यान रखना चाहिए। नौकरी करने वालों को सामान्य समय है। कृषक वर्ग को अपने कार्यों से उत्तम लाभ प्राप्त होगी। विद्यार्थी वर्ग को अपने समय का सदुपयोग करते हुए कार्य करना चाहिए। मास की 3, 9, 13, 18, 21, 24, 27 अनुकूल तारीख है।</p>



त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त जनवरी से मार्च 2019

डॉ. हेमचंद्र पाण्डेय
विनोद जोशी, उज्जैन

जनवरी 2019 के व्रत पर्व

- 1 जनवरी मंगलवार सफला एकादशी स्मार्त एवं वैष्णव, ईस्वी सन 2019 का प्रथम दिवस
- 2 जनवरी बुधवार सुरुप द्वादश सी व्रत
- 3 जनवरी गुरुवार प्रदोष व्रत
- 5 जनवरी शनिवार सदान ,श्राद्ध की अमावस्या
- 6 जनवरी रविवार स्नानदान की अमावस्या
- 7 जनवरी सोमवार पौषशुक्ल पक्ष आरंभ
- 10 जनवरी गुरुवार वैनायकी चतुर्थी व्रत
- 13 जनवरी रविवार सतगुरु श्री गोविंद सिंह जयंती
- 14 जनवरी सोमवार दुर्गाष्टमी व्रत
- 16 जनवरी बुधवार शाम्ब दशमी
- 17 जनवरी गुरुवारपुत्रदा एकादशी स्मार्तएवं वैष्णव
- 19 जनवरी शनिवार शनीप्रदोष व्रत
- 20 जनवरी रविवार पौषी पूर्णिमा व्रत
- 21 जनवरी सोमवार स्नानदान की पौषी पूर्णिमा
- 22 जनवरी मंगलवार मांग कृष्ण पक्ष आरंभ
- 23 जनवरी बुधवार नेताजी श्री सुभाष चंद्रजयन्ती
- 24 जनवरी गुरुवार संकष्टी चतुर्थी व्रत
- 26 जनवरी शनिवार भारतीय गणतंत्र दिवस पर्व
- 27 जनवरी रविवार रामानंदाचार्य जयंती
- 28 जनवरी सोमवार लाला लाजपत राय जयंती
- 30 जनवरी बुधवार महात्मा गांधी निर्वाण दिवस
- 31 जनवरी गुरुवार षड तिला एकादशी व्रत स्मार्त एवं वैष्णव

शुभ मुहूर्त जनवरी 2019

- 9 जनवरी बुधवार हल जोतना, बीज बोना (सवेरे 10.30 से 12.00)
- 13 जनवरी रविवार नवीन व्यापार (सवेरे 9.15 से 12.05 दिन में)
- 17 जनवरी गुरुवार देव प्रतिष्ठा, बाग बगीचा लगाना, जलाशय निर्माण (सवेरे 7.15 से 11.25 के बीच)
- 18 जनवरी शुक्रवार नामकरण अन्नप्राशन, अक्षर आरंभ, देव प्रतिष्ठा, गृह आरंभ ग्रह प्रवेश, खेतजोतना, बीजबोना (सूर्योदय से सवेरे 10.30 के बीच)
- 19 जनवरी शनिवार गृह आरंभ, गृह प्रवेश, खेत जोतना, बीज बोना वाहन, मशीनरी क्रय (दिन में 13.30 से 16.25 के बीच)
- 21 जनवरी सोमवार नामकरण, अन्नप्राशन, गृह आरंभ, गृह प्रवेश, खेत जोतना, बीज बोना, वाहन, मशीनरी क्रय (सवेरे 9 से 10.15, सायं 16.30 से 18.00)
- 25 जनवरी शुक्रवार प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, गृह प्रवेश, गृह आरम्भ, नवीन व्यापार (सूर्योदय से सवेरे 10.35)
- 26 जनवरी शनिवार देव प्रतिष्ठा, जलाशय निर्माण (दिन में 13.30 से 16.15 के बीच)
- 27 जनवरी रविवार देव प्रतिष्ठा, जलाशय निर्माण, खेत जोतना, बीज बोना, नवीनव्यापार वाहन क्रय (सवेरे 9.15 से दिन में 12.15)
- 28 जनवरी सोमवार जीर्ण गृह प्रवेश, खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 9.15 से 10.40, सायं 16.30 से 18.15)
- 30 जनवरी बुधवार खेत जोतना, बीज बोना, देव प्रतिष्ठा, वाहन क्रय, नवीन व्यापार, जीर्ण गृह प्रवेश, गृह आरंभ (सायं 16.30 से 18.15)
- 31 जनवरी गुरुवार प्रसूतिका स्नान (दिन में 12.00 से 13.30)





त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त जनवरी से मार्च 2019

डॉ. हेमचंद्र पाण्डेय
विनोद जोशी, उज्जैन

फरवरी 2019 के व्रत पर्व

- 1 फरवरी शुक्रवार तिल द्वादशी
- 2 फरवरी शनिवार शनि प्रदोष व्रत
- 4 फरवरी सोमवार स्नान दान श्राद्धादिकी सोमवती अमावस्या
- 5 फरवरी मंगलवार माघ शुक्ल पक्ष प्रारंभ, गुप्त नवरात्रि प्रारंभ
- 8 फरवरी शुक्रवार गौरी तृतीया, वैनायकीचतुर्थीव्रत, वरद चतुर्थी
- 10 फरवरी रविवार बसंत पंचमी पर्व, श्री पंचमी
- 11 फरवरी सोमवार मंदार षष्ठी
- 12 फरवरी मंगलवार अचला सप्तमी व्रत
- 13 फरवरी बुधवार दुर्गा अष्टमी व्रत
- 14 फरवरी गुरुवार श्री महानंदा नवमी
- 16 फरवरी शनिवार जया एकादशी व्रत स्मार्त एवं वैष्णव
- 17 फरवरी रविवार प्रदोष व्रत, भीष्म द्वादशी
- 19 फरवरी मंगलवार स्नान दान, व्रत की माघी पूर्णिमा
- 20 फरवरी बुधवार फाल्गुन मास प्रारंभ
- 22 फरवरी शुक्रवार संकष्टी चतुर्थी व्रत
- 23 फरवरी शनिवार ओंकार पंचमी
- 26 फरवरी मंगलवार काला अष्टमी, सीता अष्टमी,
- 27 फरवरी बुधवार समर्थ गुरु श्री राम दास जयंती
- 28 फरवरी गुरुवार स्वामी दयानंद जयंती

शुभ मुहूर्त फरवरी 2019

- 1 फरवरी शुक्रवार गृहप्रवेश, खेत जोतना, बीज बोना (सूर्योदय से सवेरे 10.30)
- 6 फरवरी बुधवार प्रसूति का स्नान, नामकरण चुडा करण, चोलकर्म, मुंडन, देव प्रतिष्ठा कूपारंभ (सवेरे 10.30 से 12.15)
- 7 फरवरी गुरुवार प्रसूति का स्नान, नाम करण, देव प्रतिष्ठा, कूपारम्भ, खेत जोतना, बीज बोना, वाहन क्रय (दिन में 12.15 से 13.35)
- 8 फरवरी शुक्रवार खेत जोतना, बीज बोना, मशीनरी तथा वाहन क्रय। (सूर्योदय से सवेरे 10.30 के बीच)
- 9 फरवरी शनिवार नवीन व्यापार आरंभ (दिन में 13.30 से 16.30 के बीच)
- 10 फरवरी रविवार देव प्रतिष्ठा, गृह प्रवेश, खेत जोतना, बीजबोना, नवीन व्यापार, वाहन तथा मशीनरी क्रय। (सवेरे 9.15 से दिन में 12.15)
- 11 फरवरी सोमवार अक्षर आरंभ, देव प्रतिष्ठा, गृह प्रवेश, खेत जोतना, बीज बोना, वाहन तथा मशीनरी क्रय। (सवेरे 9.05 से 10.30, सायं 16.30 से 18.15)
- 13 फरवरी बुधवार प्रसूति का स्नान (सवेरे 10.30 से 12.00)
- 14 फरवरी गुरुवार नवीन व्यापार (दिन में 12.00 से 13.35)
- 15 फरवरी शुक्रवार नामकरण, चोल कर्म, मुण्डन, अक्षर आरंभ, कूप आरंभ, गृह आरंभ, गृह प्रवेश, मशीनरी एवं वाहनक्रय खेत जोतना बीज बोना (सूर्योदय से सवेरे 10.30 के बीच आरंभ)
- 21 फरवरी गुरुवार प्रसूतिका स्नान नामकरण, देव प्रतिष्ठा, कूप आरंभ, गृह आरंभ, गृह प्रवेश, खेत जोतना, बीज बोना नवीन व्यापार (दिन में 11.30 से 13.30 के बीच)
- 22 फरवरी शुक्रवार नामकरण, चोल कर्म, मुंडन संस्कार, देव प्रतिष्ठा, कूपआरंभ, गृह आरंभ, नवीन व्यापार, वाहन एवं मशीनरी क्रय (सूर्योदय से सवेरे 10.30)
- 24 फरवरी रविवार देव प्रतिष्ठा, जीर्णगृहप्रवेश, नवीन व्यापार (सवेरे 9.15 से 12.15 दिन में)
- 27 फरवरी बुधवार प्रसूति का स्नान (सवेरे 10.30 से 12.15 दिन में)
- 28 फरवरी गुरुवार गृह प्रवेश, खेत जोतना, बीज बोना वाहन एवं मशीनरी क्रय। (दिन में 11.50 से 13.35 के बीच)



त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त जनवरी से मार्च 2019

डॉ. हेमचंद्र पाण्डेय
विनोद जोशी, उज्जैन

मार्च 2019 के व्रत पर्व

- 2 मार्च शनिवार विजया एकादशी व्रत स्मार्त एवं वैष्णव
- 3 मार्च रविवार प्रदोष व्रत
- 4 मार्च सोमवार महाशिवरात्रि व्रत
- 6 मार्च बुधवार स्नान दान श्राद्ध की अमावस्या
- 7 मार्च गुरुवार फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारंभ
- 10 मार्च रविवार वैनायकी चतुर्थी व्रत
- 11 मार्च सोमवार ब्रह्मर्षियाज्ञवल्कजयन्ती।
- 12 मार्च मंगलवार गोरुपिणी षष्ठी
- 14 मार्च गुरुवार श्री दुर्गाष्टमी व्रत
- 16 मार्च शनिवार श्री हरि जयंती
- 17 मार्च रविवार आमलकी एकादशी व्रत
- 18 मार्च सोमवार गोविंद द्वादशी, सोमप्रदोष व्रत
- 20 मार्च बुधवार फाल्गुन पूर्णिमा होली का दहन भद्रा के बाद
- 21 मार्च गुरुवार धुलण्डी पर्व
- 22 मार्च शुक्रवार भाई दूज
- 24 मार्च रविवार संकष्टी चतुर्थी व्रत
- 25 मार्च सोमवार सोम वती पंचमी व्रत, रंग पंचमी पर्व
- 26 मार्च मंगलवार स्कंद षष्ठी
- 27 मार्च बुधवार शीतला सप्तमी
- 31 मार्च रविवार पाप मोचनी एकादशी, स्मार्त एवं वैष्णव।

शुभ मुहूर्त मार्च 2019

- 1 मार्च शुक्रवार नामकरण अन्नप्राशन विद्यारंभ, कूपारंभ (सूर्योदय से सवेरे 10.30)
- 2 मार्च शनिवार ग्रह प्रवेश (सवेरे 8 से 9.15, दिन में 13.30 से 16.30)
- 3 मार्च रविवार विद्या आरंभ, ग्रह प्रवेश, नवीन व्यापार, वाहन एवं मशीनरी क्रय (सवेरे 9.15 से 12.15 दिन में)
- 4 मार्च सोमवार प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, देव प्रतिष्ठा, कूप आरंभ, गृह आरंभ, नवीन व्यापार, हल जोतना बीज बोना (सूर्योदय से सवेरे 10.15 के बीच)
- 8 मार्च शुक्रवार प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, चूड़ा कर्म, मुंडन संस्कार, विद्या आरंभ, देव प्रतिष्ठा, वाहन मशीनरी क्रय, नवीन व्यापार, खेत जोतना बीज बोना (सूर्योदय से सवेरे 10.35 के बीच)
- 9 मार्च शनिवार देव प्रतिष्ठा, नवीन व्यापार, वाहन तथा मशीनरी क्रय (दिन में 13.30 से 16.30 के बीच)
- 13 मार्च बुधवार नामकरण, अन्नप्राशन, कर्ण वेध, देव प्रतिष्ठा, कूप आरंभ, गृह आरंभ, नवीन व्यापार (सवेरे 10.30 से 12.15 के बीच प्रारंभ)
- 14 मार्च गुरुवार खेत जोतना, बीज बोना, वाहन एवं मशीनरी क्रय (दिन में 12.15 से 13.35)
- 17 मार्च रविवार गृह आरंभ (सवेरे 9.15 से 10.45)
- 19 मार्च मंगलवार गृह आरंभ (दिन में 11.30 से 13.30)
- 20 मार्च बुधवार गृह आरंभ (सवेरे 10.30 से 12.15 के बीच)
- 21 मार्च गुरुवार प्रसूति का स्नान (दिन में 12.15 से 13.35)
- 22 मार्च शुक्रवार नामकरण, अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना (सूर्योदय से सवेरे 10.35 के बीच)
- 25 मार्च सोमवार नामकरण अन्नप्राशन (सवेरे 9.15 से 10.35 के बीच)
- 26 मार्च मंगलवार गृह आरंभ (दिन में 11.30 से 13.30 के बीच)
- 28 मार्च गुरुवार खेत जोतना बीज बोना (दिन में 12.05 से 13.35 के बीच)
- 29 मार्च शुक्रवार गृह आरंभ (सूर्योदय से 10.35 के बीच)





आपके पत्र

संपादक महोदय

जीवन वैभव त्रैमासिक पत्रिका मेरे एक मित्र के यहां देखने को मिली, पत्रिका में ऐसे विषय पर आलेख पढ़ने को प्राप्त हुए हैं जो कि वास्तव में जीवन के लिए बड़े महत्वपूर्ण हैं। स्वास्थ्य के विषय पर बड़ी महत्वपूर्ण जानकारी तथा ज्योतिष विषय पर विद्वान लेखक श्री एस एस लाल तथा श्री बीएल शर्मा जी के महत्वपूर्ण आलेख ज्योतिष फलित ज्योतिष पर विशिष्ट ज्ञान प्रदान करते हैं पढ़ने को मिले। अध्यात्म जैसे महत्वपूर्ण विषय पर भी ज्ञान वर्द्धक जानकारी का प्रकाशन ऐसा जान पड़ता है कि जीवन वैभव भी एक ज्ञान की त्रिवेणी जैसी होकर समाज को ज्ञान की गंगा में स्नान कराकर पावित्र करने का कार्यभार संभाले हुए है। ऐसे सदसाहित्य प्रकाशन के लिए जीवन वैभव के पूरे सम्पादक मण्डल को बधाई।।

- डी.एम. भटनागर, दिल्ली

संपादक महोदय

जीवन वैभव त्रै मासिक पत्रिका पढ़ने को मिली वास्तव में पत्रिका में परिवार के लिए आवश्यक सभी सामग्री प्रधान की गई साथ ही ज्योतिष विषय पर प्रारंभिक अध्ययन करने के लिए भी बेजोड़ सामग्री प्रकाशित की गई। मैं पूरे संपादक मंडल के साथ-साथ हमारे पूज्य गुरुजी को इसके लिए बधाई प्रेषित करता हूँ, यह पत्रिका समय पर प्रकाशित होती रहे इसके लिए ईश्वर से प्रार्थना और आपको सादर शुभ कामना।

- रवि शंकर मिश्रा, भोपाल

संपादक महोदय

कभी-कभी मन जब अशांत होने लगता है तब इस पत्रिका

प्रतिक्रियाएं

में प्रकाशित ज्ञानवर्धक सामग्री को मैं पढ़ने लगता हूँ तब एक तरह की शक्ति महसूस होने लगती है। नैतिकता के आलेख जो कि आत्म बल बढ़ाने के लिए हैं, जिससे यह सर्वश्रेष्ठ पुस्तक के रूप में प्रतीत होती है। मैं इसका नियमित सदस्य हूँ प्रत्येक अंक में कुछ ऐसी सामग्री प्राप्त हो जाती है जिससे जीवन में कुछ करने का मनोबल बढ़ जाता है और अपने काम में जुट जाता हूँ। इसमें सामग्री और बढ़ाएंगे तो अधिक अच्छा रहेगा।

- कन्हैया लाल शर्मा, बसही, मंदसौर

आदरणीय सभी आत्मीयजन

आपके पत्रों/मोबाईल द्वारा प्रतिक्रिया पढ़कर ऐसा प्रतीत हुआ कि आप लोग मात्र पाठक गण ही नहीं अपितु जीवन में परिवार के सदस्य हैं। इसी कारण मेरे द्वारा आपको आत्मीय जन संबोधन किया गया है। समय-समय पर प्रदाय की जाने वाले प्रतिक्रियाओं से ही जीवन वैभव का यह स्वरूप देखने को मिल रहा है। जिससे की प्रत्येक पाठक गण द्वारा सराहना अपनी प्रतिक्रियाओं के फलस्वरूप हो रही है। हमारे अन्य सदस्यों से भी अनुरोध है कि अपनी सदस्यता को निरंतरता बनाए रखें ताकि साहित्य का लाभ पूरे परिवार को मिल सके, यदि वार्षिक सदस्य हैं तो सदस्यता शुल्क प्राप्त नहीं होने की स्थिति में भी आपकी पत्रिका निरंतर पोस्ट द्वारा भेजी जा रही है। ऐसे सदस्यों को अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करने अनुरोध है। विद्वान लेखकों से अनुरोध है कि वे अपने सारगर्भित आलेख की टंकित प्रति डाक या इमेल द्वारा भेज सकते हैं।

- संपादक



जीवन वैभव की सदस्यता हेतु क्या करें?

जीवन वैभव पत्रिका आपकी अपनी पत्रिका है, इसे आप जैसे प्रबुद्ध पाठकों ने सराहा और इसकी प्रगति के लिए मार्गदर्शन दिया है। आपसे निवेदन है कि वार्षिक/त्रैवार्षिक/आजीवन सदस्यता की वृद्धि कर प्रचार-प्रसार संख्या बढ़ाने में सहयोग करें। सद्ज्ञान का प्रचार-प्रसार करने से समाज में धनात्मक ऊर्जा का संचार होगा जो कि एक पुण्य कार्य है। अतः पुण्यकार्य में सहयोगी बनें।

अपने संस्थान का विज्ञापन दें

आप अपने संस्थान का विज्ञापन यदि इस त्रैमासिक एवं संग्रहणीय जीवन वैभव में देंगे तो लगातार तीन माह ही नहीं जब तक यह पत्रिका पाठक के पास सुरक्षित रहेगी, आपके संस्थान का स्मरण होता रहेगा। अतः शीघ्रता करें अपनी विज्ञापन निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें।

अपने घर बैठे जीवन वैभव पत्रिका प्राप्त करें

जीवन वैभव पत्रिका प्राप्त करने के लिये आपको जीवन वैभव पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन पत्र पत्रिका में से निकालकर अपना नाम पता स्पष्ट रूप से उल्लेख कर वार्षिक/त्रैवार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता का निर्धारित शुल्क जीवन वैभव नाम से इलाहाबाद बैंक, अरेरा कालोनी, शाखा भोपाल के जीवन वैभव खाता क्रमांक 50159870448 में जमा करते हुए बैंक की जमा पर्ची (स्लिप) सदस्यता आवेदन पत्र के साथ प्रेषित कर दें। यदि इलाहाबाद बैंक के अतिरिक्त अन्य बैंक से शुल्क जमा कराये जाने की स्थिति में एन.ई.एफ.टी. (नेशनल इलेक्ट्रॉनिक फण्ड ट्रांसफर) माध्यम से निम्नानुसार शुल्क जमा कराएं -

खाता क्रमांक : 50159870448

खाते का नाम : जीवन वैभव

आय.एफ.एस.सी. कोड : ALLA 0210197

यदि आप रजिस्टर्ड डाक से पत्रिका प्राप्त करना चाहते हैं तो रजिस्टर्ड डाक का शुल्क पृथक से सदस्यता की राशि के साथ जोड़कर प्रेषित कर दें। अन्यथा साधारण डाक से पत्रिका प्रेषित की जायेगी।

जीवन वैभव के सदस्यों से आग्रह

जिन सदस्यों के सदस्यता शुल्क राशि समाप्त हो गई है उनसे अनुरोध है कि उपरोक्त दर्शाए अनुसार जीवन वैभव के खाते में राशि जमाकर सदस्यता नियमित कर लें।

संपादक

जीवन वैभव

15-ए, महाराणा प्रताप नगर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, भोपाल

संपर्क: 9425008662; ईमेल: hcp2002@gmail.com

जीवन वैभव की सदस्यता हेतु आवेदन

नाम

डाक का पूरा पता

दूरभाष/मोबाईल

सदस्यता आजीवन/ त्रैवार्षिक/ वार्षिक

सदस्यता शुल्क का विवरण 1800/- 300/- 100/-

बैंक ड्राफ्ट क्रमांक दिनांक

चैक क्रमांक दिनांक

जीवन वैभव के नाम से इलाहाबाद बैंक अरेरा कॉलोनी शाखा भोपाल के खाता नं. 50159870448 में जमा की गई राशि की बैंक स्लिप की फोटो प्रति।

त्रैमासिक पत्रिका "जीवन वैभव" के बारे में आपकी राय:-

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

पाठक के हस्ताक्षर

पता:

जीवन वैभव

15-ए, महाराणा प्रताप नगर

प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, भोपाल

संपर्क: 9425008662

ईमेल: hcp2002@gmail.com

नोट: उपरोक्त जानकारी डाक/कोरियर/ई-मेल द्वारा प्रेषित करें। ताकि जीवन वैभव की सदस्यता देते हुए आगामी अंक की प्रति प्रेषित की जा सके।





ज्योतिष प्रश्नोत्तरी कूपन

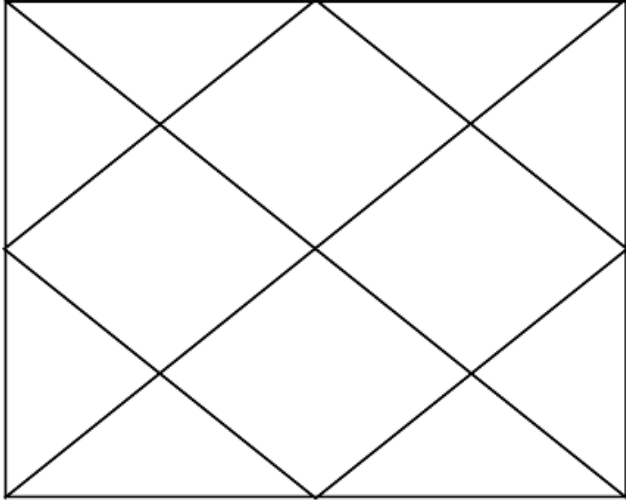
नाम :

पता :

जन्म तारीख :

जन्म समय :

जन्म स्थान :



कोई एक प्रश्न

.....

भवदीय

नोट: जीवन वैभव के विद्वान लेखकों और पाठकों के द्वारा ज्योतिष परामर्श पत्रिका के माध्यम से चाहा है इस अंक से हमारे द्वारा ज्योतिष परामर्श कूपन उपरोक्तानुसार दिया गया है इसकी पूर्ति करते हुए हमें प्राप्त होने पर ज्योतिष विद्वानों का एक मण्डल विचार-विमर्श उपरांत परामर्श उत्तर नाम प्रकाशित नहीं करते प्रदाय करेगा।

ज्योतिष प्रश्नोत्तरी
जीवन वैभव

15-ए, महाराणा प्रताप नगर
प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, भोपाल

परिवार के सभी सदस्यों के लिए उपयोगी
एवं मार्गदर्शक पुस्तक

सुप्रभात की अमृतवाणी

मूल्य : 50/- केवल

(शिक्षाप्रद-जीवनोपयोगी
सदुपदेशों पर आधारित पुस्तक)

लेखक - डॉ. पं. हेमचन्द्र पाण्डेय

निःशुल्क पुस्तक प्राप्त करने के लिए

जीवन वैभव के त्रैवार्षिक सदस्य बनें ...

पाँच पुस्तकें प्राप्त करने के लिए

डाक खर्च देना आवश्यक नहीं।

व्यवस्थापक :

जीवन वैभव

15 ए, जोन-1, प्रेस कॉम्प्लेक्स,
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल

संपर्क : 9425008662

ईमेल : hcp2002@gmail.com

